ISSN 2394-8485

मासिक

# गुरमत ज्ञान

३/-

मार्गशीर्ष-पौष संवत् नानकशाही ५५५ दिसंबर 2023 वर्ष १७ अंक ४

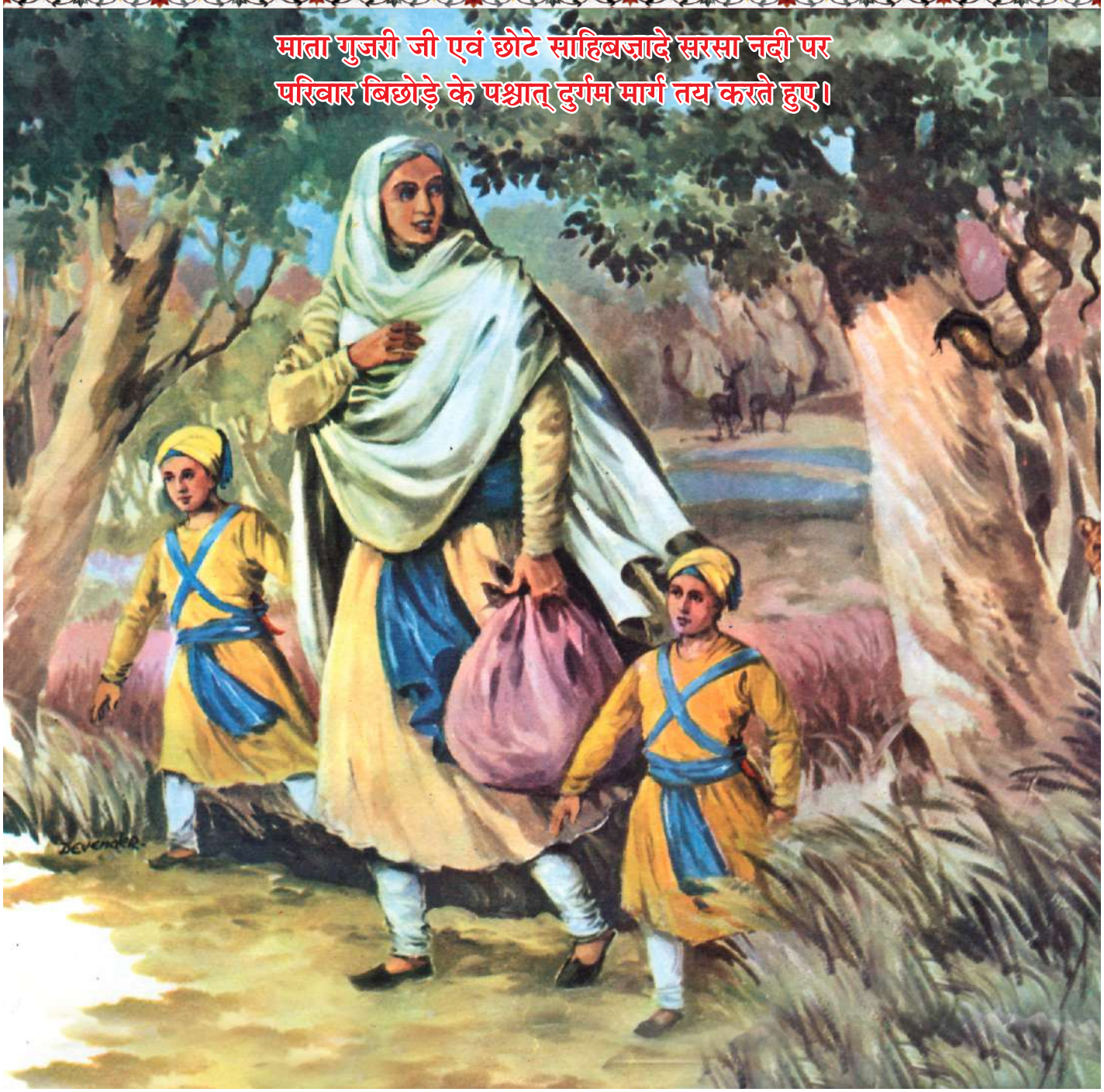

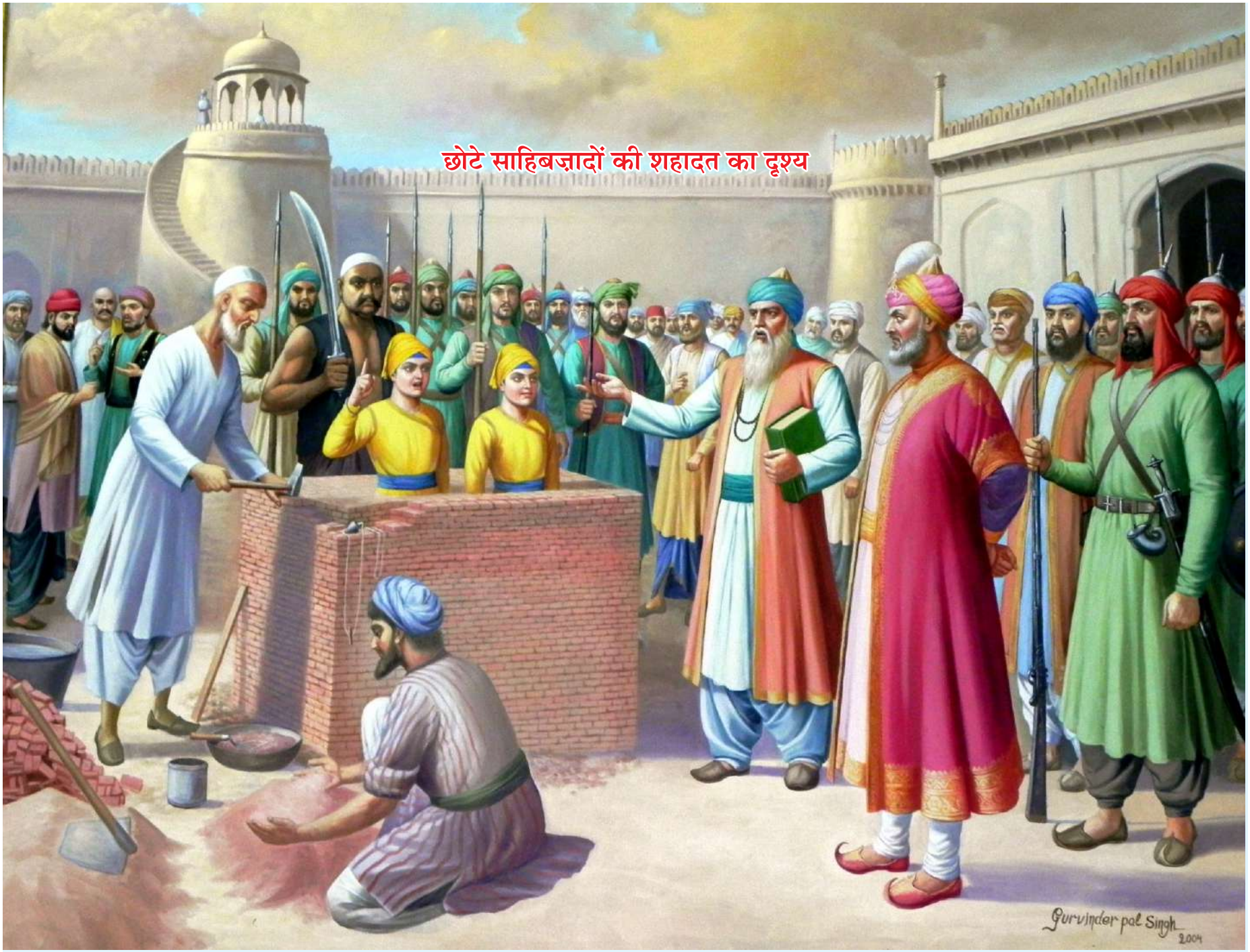
छोटे साहिबज़ादों की शहादत का दृश्य
Gurvinder pal Singh
2004

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

*गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥*
*अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥*

मासिक

# गुरमत ज्ञान

मार्गशीर्ष-पौष संवत् नानकशाही 555
वर्ष 17 अंक 4 दिसंबर 2023

*संपादक : सतविंदर सिंघ*
*सहायक संपादक : जगजीत सिंघ*

| चंदा | |
|---|---|
| सालाना (देश) | 10 रुपये |
| आजीवन (देश) | 100 रुपये |
| सालाना (विदेश) | 250 रुपये |
| प्रति कापी | 3 रुपये |

***चंदा भेजने का पता***
**सचिव, धर्म प्रचार कमेटी**
**(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)**
**श्री अमृतसर साहिब -143006**
**फोन :** 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
**फैक्स** : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

नवम पातशाह की लासानी शहादत 7
-डॉ. मनजीत कौर

छोटे साहिबज़ादों की शहादत . . . 13
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

चमकौर की जंग का विलक्षण इतिहास 21
-बीबी मनजीत कौर लक्खपुर

चमकौर की गढ़ी के शहीद : भाई संगत सिंघ 26
-स. तरलोचन सिंघ

शहीद भाई बचित्तर सिंघ 29
- डॉ. हरप्रीत कौर

बाबा गुरबखश सिंघ शहीद 33
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

. . . मुद्दकी की लड़ाई 35
- स. हरभजन सिंघ

महान धार्मिक और साहित्यिक शख्सियत : भाई वीर सिंघ 42
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल

खबरनामा 46

# गुरबाणी विचार

*पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥*
*मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥*
*ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥*
*बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥*
*जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥*
*करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥*
*बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥*
*सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥*
*पोखु सुहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११ ॥* *(पन्ना १३५)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज माझ राग में 'बारह माहा' बाणी की इस पउड़ी में पौष मास की ऋतु की पृष्ठभूमि में दांपत्य जीवन के संकेतों के प्रसंग में जीव-स्त्री को परमात्मा-पति की खुशियां प्राप्त करने वाला गुरमति मार्ग दर्शाते हैं।

गुरु जी का कथन है कि पौष माह के अत्यंत कठोर एवं निष्ठुर शीत के महीने में जीव-स्त्री को शीत के कारण वनस्पति पर एकत्रित हुआ जल कुछ नहीं कहता अर्थात् वह जीव-स्त्री सांसारिकता और इसमें विद्यमान विषय-विकारों के पाले से बची रहती है, जैसे उसका प्रभु-पति उसके गले मिला हुआ है अर्थात् जिसने अपने हृदय में उसकी पावन स्मृति को सकुशल संभाल कर रखा है। ऐसी जीव-स्त्री का मन मालिक के चरण-कमलों के साथ बंधा हुआ होता है और उसका एक-एक श्वास प्रभु-पति के दीदार की तीव्र इच्छा में ही व्यतीत होता है। उस जीव-स्त्री को निर्धनों को पालने वाले मालिक की सेवा का ही सहारा एवं लाभ होता है। प्रभु-पति की सेवा में लगी हुई जीव-स्त्री को विषय-विकार दुखित नहीं करते, क्योंकि वह तो अपना मनुष्य-जन्म रूपी अवसर अच्छे संगियों के साथ मालिक के गुण गायन करने में ही सफल करती है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि पौष के महीने में जीव-स्त्री अपने शरीर के रूपाकार के मूल स्रोत प्रभु से सच्चा प्यार कर एकमन-एकचित्त हो जाती है। अध्यात्म के स्रोत प्रभु ने ऐसी नेक जीव-स्त्री का हाथ इस प्रकार पकड़ा होता है कि वह उससे पुनः बिछड़े ही न। ऐसे परमात्मा से तो मैं लाख बार कुर्बान चली जाऊं! सतिगुरु जी कहते हैं कि हे नानक! जीव-स्त्री अपने मालिक के द्वार पर आ जाती है अथवा सभी सांसारिक सहारों को भुला कर मात्र प्रभु का ही सहारा चाहने लगती है। परमात्मा ऐसी दया-दृष्टि वाला है कि उसको उसकी इज्जत रखनी ही होती है। परमात्मा बेपरवाह भी है। वह पौष महीने में जिस जीव-स्त्री पर बख्शिश करता है उसका यह महीना सुहावना हो जाता है और यहां-वहां के सभी सुख उसको मिल जाते हैं।

संपादकीय

# साहिबज़ादों की शहादत के कारण आज स्थिर है हमारी पृथक-सत्ता

गौरवमयी सिक्ख इतिहास में दिसंबर का महीना जब्र, जुल्म, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ हक-सत्य-न्याय की खातिर जूझते हुए गुरु-परिवार और गुरसिक्खों द्वारा दी गई लासानी शहादतों को अपने अंदर समोये बैठा है। ज़ालिम शासकों द्वारा लताड़ी जा रही प्रजा को उनके मौलिक अधिकार दिलाने और न्याय वाले धर्म राज्य की स्थापना करने के लिए सरवंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना पूरा जीवन और पूरा परिवार मानवता के भले के लिए न्यौछावर कर दिया। गुरु जी ने खालसा पंथ की सृजना करते समय एक ही बाटे में से सभी को खंडे की पाहुल छका कर सदियों से देश में चले आ रहे जात-पांत के विभाजन को पूरी तरह से खत्म कर दिया। गुरु जी ने खालसा को पांच ककारी रहित के धारक बना कर संपूर्ण मानव बनाया और समय की प्रचलित धार्मिक भ्रांतियों एवं बिप्रवादी रीतियों से मुक्त स्वस्थ जीवन-जाच बतायी। यह सब मुगलिया हुकूमत और पहाड़ी हिंदू राजाओं को कदाचित सहन न हुआ। उन्होंने गुरु साहिब के विरुद्ध सामूहिक संघर्ष जारी रखा। लंबा समय उनके साथ जंग करने के पश्चात आखिर गुरु साहिब को श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली करना पड़ा।

श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ने के कुछ ही दिनों के बाद बड़े साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी तथा बहुत-से गुरु-प्यारे गुरसिक्ख चमकौर की जंग में शत्रु दल के साथ जंग करते हुए शहीद हो गए। छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी को सरहिंद में दीवार में जिंदा चिन कर शहीद किया गया तथा माता गुजरी जी ठंडे बुर्ज में शहादत प्राप्त कर गए । छोटे साहिबजादों की शहादत उम्र के तकाज़े के साथ-साथ बाकमाल और बेमिसाल है । तरह-तरह के प्रलोभन, भय आदि हर प्रकार के साधन इस्तेमाल कर ज़ालिम थक गए, परंतु साहिबज़ादों के हौसले बुलंद रहे। ऐसी हिम्मत के पीछे दशमेश पिता द्वारा प्रदत्त अमृत की शक्ति, माता जीतो जी एवं दादी मां माता गुजरी जी की शिक्षा और दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की ''सीसु दीआ पर सिररु न दीआ'' वाली प्रेरणा काम कर रही थी। गुरु जी के लाडले साहिबज़ादों ने यह साबित कर दिखाया कि ज़िंदगी में बड़े कीर्तिमान स्थापित करने के लिए लंबी उम्र की नहीं बल्कि बड़े जज़्बे और दृढ़ इरादे की ज़रूरत

होती है।

गुरु साहिबान का आदर्श ऐसे स्वस्थ मानव और समाज की सृजना करना था जहां हरेक को अपने धर्म के अनुसार अपने धार्मिक संस्कार करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो, किसी पर अपना धर्म ज़बरन न थोपा जाये, अपने सभ्याचार के अनुसार पहनावा पहनने और अपनी बोली बोलने की आज़ादी हो, देश के आर्थिक साधन योग्यता के अनुसार सबके लिए बराबर हों, किसी गरीब का हक न मारा जाये, हरेक काम न्याय की कसौटी पर परख कर किया जाए। इन सब बातों को अमल में लाने की खातिर गुरु साहिबान ने गुरबाणी के माध्यम से प्रचार किया। जब-जब इन नियमों, मानवीय अधिकारों का हनन हुआ, तब ज़रूरत पड़ने पर शस्त्रबद्ध संघर्ष भी करना पड़ा। इस संघर्ष में गुरु साहिबान, गुरु-परिवार, बच्चों, बुजुर्गों तथा असंख्य सिक्खों की शहादत हुई । हक–सच के लिए जूझते हुए दी कुर्बानियों के रक्तरंजित इतिहास को पढ़–सुनकर हरेक गुरसिक्ख को अपने पूर्वजों पर फख्र महसूस होता है।

वास्तव में यह फख्र वाली बात तभी समझी जा सकती है यदि इन शहादतों के मंतव्य के अनुसार आज हम अपना जीवन ढाल सकें। हमें अपने बच्चों को साहिबज़ादों की शहादत की साखियां खुद सुनानी पड़ेंगी। बच्चों को नित्तनेमी बनाकर गुरबाणी के अर्थों को समझाना पड़ेगा और अपने पूर्वजों की उदाहरणें उनके आगे पेश करनी पड़ेंगी। बेगानी भाषाओं का मोह छोड़कर सबसे पहले अपनी भाषा का ज्ञान, अपनी विरासत का ज्ञान देना अति ज़रूरी बनाना पड़ेगा । यदि हम सभी निश्चय करके अपने फर्ज़ को समझ कर इस मार्ग पर चलने का प्रण कर लें, तो हमारा समाज आज भी खुशहाली की मंज़िलों को छू सकता है। हमें सर्वप्रथम खुद साहिबजादों के वारिस बन गुरमति जीवन बनाना होगा, तत्पश्चात् अपने बच्चों को साहिबज़ादों के वारिस बनाने के लिए प्रयत्नशील होना पड़ेगा, तभी हमारी आने वाली पीढ़ियां हमारे गौरवमयी इतिहास, हमारी गौरवमयी कौमी विरासत और हमारे न्यारे अस्तित्व को बरकरार रख सकेंगी।

# नवम पातशाह की लासानी शहादत

*-डॉ. मनजीत कौर**

मानव जीवन की दो मुख्य भावनाएं हैं-- स्वार्थ और परार्थ, जो क्रमशः उसके पशुत्व एवं मनुष्यत्व की सूचक हैं। प्रथम भावना जहाँ आत्मा को संकीर्ण एवं निकृष्ट बना डालती है, वहीं दूसरी मनोवृत्तियों को उन्मुक्त करते हुए कल्याणकारी आत्म-विस्तार में योगदान देती है। मनुष्यत्व में मनुष्य दूसरों के दुख में दुख का अनुभव करता है। अन्य किसी जीव में यह अनुभव-शक्ति नहीं है। यह परदुख कातरता तथा परसुख में सहृदयता ही मनुष्य का सर्वप्रधान मनुष्यत्व तथा मानव की सर्वप्रधान मानवता है। यह परदुख कातरता, यह दया नामक दिव्य गुण, यह सुकोमल करुणा, जो पुण्य नेत्रों से मंगलाश्रु के रूप में छलछला उठती है, यही यथार्थ मनुष्यत्व है, यही सच्ची मानवता है।

संक्रमण के युग में जहां जीवन का प्रत्येक क्षेत्र असमन्वय की पराकाष्ठा पर था। भेदभाव की खाई इतनी गहरी हो चुकी थी कि उसे पाटने तथा समन्वय की भावना को पुष्ट करने हेतु मध्यकालीन संतों, भक्तों आदि ने धर्म तथा साधना पर स्वयं आचरण कर दूसरों को भी उस पथ का पथिक बना कर जहाँ ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग सुगम एवं सहज बना दिया और मानव-मन को सुसंस्कृत कर मानवीय संस्कृति में प्राण फूंक दिए, वहीं धार्मिक स्वतन्त्रता हेतु अपना विलक्षण शहीदी देकर श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा जिस शहादत की परंपरा का सूत्रपात हुआ था, उसे अपनी शिष्य परंपरा में अथवा समग्र जाति में उनके चरित्र में उतार कर एक नवीन स्फूर्ति, जागृति तथा नई क्रांति का भाव पैदा कर शहीदी परम्परा की एक अद्‌भुत एवं आलीशान शृंखला हिंदुस्तान के इतिहास में प्रारंभ की, जो मानवीय मूल्यों को सर्वाधिक महत्त्व देते हुए अन्याय और अत्याचार का मुँहतोड़ जवाब दे सके। उनकी शहादत ने मानवता को स्वाभिमान से जीना और मरना सिखाया। श्री गुरु नानक साहिब की बाणी का गहरा प्रभाव श्री गुरु तेग बहादर साहिब पर स्पष्ट लक्षित होता है :

*जे जीवै पति लथी जाइ ।।*
*सभु हरामु जेता किछु खाइ ।। (पन्ना १४२)*

अर्थात् यदि कोई (नाम-विहीन) व्यक्ति जीवित है और अपना सम्मान गंवा कर दुनिया से जा रहा है, तो समझो वह जो कुछ भी यहां खा-पी रहा है, सब हराम है।

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

औरंगजेब के शासन-काल में हिंदुस्तान की जनता की दशा बहुत ही दयनीय थी। मान-सम्मान उसके जीवन से मानों दरकिनार हो चुका था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी शहादत देकर निर्भयस्वरूप, गौरवपूर्ण जीवन जीने की युक्ति समझाई। गुरु जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही विलक्षण हैं। उनके वैराग्य में न तो पलायन है और न ही निराशा है। गुरु जी समाज के पतन से दुखी थे और निर्दोष जनता पर खुलेआम किए जाने वाले अत्याचारों तथा शोषण से व्यथित थे। तत्कालीन समाज अपनी दुर्दशा के प्रति उदासीन था तथा सांसारिक सुखों की लालसा पाले स्वार्थ-साधनों में लिप्त था। गुरु जी ने ऐसे संसार की नश्वरता एवं सत्ता व सम्पत्ति की क्षणभंगुरता के प्रति चेतावनी दी। उन्होंने भारत की पुरातन प्रज्ञा को पुनर्जीवित किया तथा समाज की आत्मा में निर्भीकता से उत्पन्न एक नवीन स्फुरण जगाया। यहीं नहीं, उन्होंने मनुष्य को 'मैं' के बोध से उत्पन्न मोह तथा लोभ जैसे विकारों से मुक्त हो मुक्ति-दाता बनने की प्रेरणा दी। उनकी पावन बाणी इस संदर्भ में कितनी प्रासंगिक है :

*जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार।।*
*कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार।।*
*(पन्ना १४२७)*

इसके अतिरिक्त गुरु जी ने धन, राज्य आदि के अभिमान को व्यर्थ बताते हुए इसे स्वप्न सदृश्य तथा नश्वर बताया है। इस संदर्भ में गुरु जी द्वारा पावन बाणी का संदेश है :

*झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु।।*
*इन मै कछु तेरो नहीं नानक कहिओ बखानि।।*
*(पन्ना १४२६)*

गुरु जी ने अपनी रूहानी बाणी से समूची मानवता को निर्भय एवं स्वतन्त्रत स्वरूप प्रदान किया। किसी को भय न देने तथा किसी अन्य का भय न मानने का पावन संदेश दिया और कर्तव्यपरायणता एवं स्वतन्त्रता का स्थायी संकल्प प्रस्तुत किया, बेशक इसके लिए उन्हें अपनी शहादत देनी पड़ी। डॉ. धर्मपाल मैनी के विचारानुसार, गुरु जी की सांस्कृतिक चेतना का मूल बिंदु इसी में है कि उन्होंने मानव जीवन को उद्देश्यपूर्ण स्वीकार किया है। जीव भौतिक लिप्साओं की पूर्ति में ही सम्पूर्ण जीवन को नष्ट न कर दे, अपितु वास्तविक लक्ष्य के प्रति जागरूक भी रहे, इस संदर्भ में गुरु जी की बाणी का प्रमाण है :

*प्राणी नाराइन सुधि लेहि।।*
*छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर*
*ब्रिथा जातु है देह।।१।।रहाउ।।...*
*माइआ को मदु कहा करतु है*
*संगि न काहू जाई।।*
*नानकु कहतु चेति चिंतामनि*
*होइ है अंति सहाई।।* *(पन्ना ९०१)*

गुरबाणी एवं कुर्बानी को चिन्तकों ने सिक्ख धर्म में रीढ़ की हड्डी सदृश्य माना है। जहां

गुरबाणी प्रेमा-भक्ति को दृढ़ करवाती है तथा सत्य-मार्ग का पथिक बनाती है, वहीं कुर्बानी कौम में ज़ज्बा पैदा करती है। शहीदों की तारीफ में एक शायर ने क्या खूब लिखा है :

*जिस कौम की शक्ति अगर देखनी है,*
*तो गिनो न उसके मुरीद कितने !*
*व्यक्ति गिनो न बल्कि करो यह गिनती,*
*उस कौम में हुए हैं शहीद कितने !*

बेशक सिक्खों की आबादी समूह आबादी की लगभग दो प्रतिशत है, लेकिन इतिहास साक्षी है कि इस कौम की शहादतें, शहादतों के इतिहास में नब्बे प्रतिशत हैं। सिक्खी खंडे की धार से भी तीखी है इसीलिए सिक्ख कौम सिक्खी निभाते हुए देश-धर्म हेतु तथा समूची मानवता के कल्याण हेतु शहादत प्राप्त करने के लिए सदैव तत्पर रहती है। सिक्ख धर्म में शहीदी का बहुत ही गौरवपूर्ण स्थान है। प्रतिदिन सिक्ख अरदास में शहीद सिंघ-सिंघनियों को अत्यन्त श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है।

भक्त कबीर जी ने लोगों के मन से मृत्यु का भय दूर करने हेतु मृत्यु को जीवन से अधिक आनदंमयी बताते हुए फरमान किया :

*कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु ।।*
*मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ।।*
*(पन्ना १३६५)*

यही नहीं, धर्म हेतु आपा कुर्बान करने हेतु भी भक्त कबीर जी ने ओजस्वी बाणी द्वारा अन्तर्रात्मा को झकझोरने वाला पावन शबद उच्चारण किया है :

*सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ।।*
*पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ।।*
*(पन्ना ११०५)*

सिक्ख धर्म की मर्यादा अनुसार ईश्वरीय मार्ग के पथिक एवं मानवता से प्रेम करने वाले सत्यवादी मनुष्य की शहीदी ही प्रभु-दर पर प्रवान है। इस संदर्भ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पावन फरमान है :

*मरणु मुणसा सूरिआ हकु है*
*जो होइ मरनि परवाणो ।।*
*सूरे सेई आगै आखीअहि*
*दरगह पावहि साची माणो ।।* *(पन्ना ५८०)*

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने तो जहां अपनी अमृतमयी बाणी से निर्भयस्वरूप जीवन जीने का संदेश दिया, वहीं वे मानव को निरन्तर शरीर की क्षणभंगुरता एवं भौतिक पदार्थों की नश्वरता के प्रति सचेत करते रहे :

*पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ।।*
*जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ।।*
*(पन्ना १४२६)*

श्री गुरु तेग बहादर साहिब मानवीय हितों एवं धार्मिक स्वतन्त्रता हेतु समूची मानवता की ढाल बन गए, जब अत्याचारी धर्मान्ध शासक औरंगजेब बलपूर्वक सबको इसलाम कबूल करवाना चाहता था। हिंदुओं की कायरता का फायदा उठाता हुआ क्रूर एवं कट्टरवादी

औरंगजेब हिंदुओं के विद्या-केन्द्रों, धार्मिक स्थलों, उनके तिलक और जनेव आदि प्रतीकों को समूल नष्ट करके इसलाम की पताका फहरा रहा था। विशेष तौर पर हिंदुओं के धार्मिक स्थल-- बनारस, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, कश्मीर आदि के ब्राह्मणों पर जबरदस्ती का जोर अधिक था।

इतिहासकार लिखते हैं कि कश्मीर के गवर्नर इफ्तिखार खान ने ब्राह्मणों को बुरी तरह से प्रताड़ित कर रखा था। उसके घोर असहनीय अत्याचारों से लाचार एवं दुखी होकर ब्राह्मणों का एक शिष्ट-दल पण्डित कृपा राम के नेतृत्व में श्री अनंदपुर साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शरण में आया और अपनी करुण व्यथा गुरु जी के समक्ष बयान की कि मुगल हुकूमत जबरदस्ती हमारा धर्म परिवर्तित करना चाहती है। यह सुन कर गुरु जी द्रवित हो उठे। शिष्ट-दल सिर झुकाए खड़ा था। स्पष्ट था कि उनके अंदर सहम घर कर चुका था। औरंगजेब से टक्कर लेने के लिए वे साहस नहीं जुटा पा रहे थे। इसी दौरान श्री गुरु तेग बहादर साहिब के इकलौते पुत्र बाल गोबिंद राय (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) वहां प्रवेश करते हैं और उन आगुन्तकों के आने का कारण पूछते हैं-- ''पिता जी! ये आगन्तुक चिन्तातुर क्यों हैं?''

श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपने सुपुत्र को औरंगजेब के जुल्मों व कश्मीरी ब्राह्मणों के आने की सारी दासतान सुनाते हैं। बाल गोबिंद राय ने तुरंत प्रश्न किया- ''पिता जी! फिर इनकी रक्षा हेतु क्या करना होगा?'' पिता-गुरु का उत्तर था-- ''किसी महापुरुष को शहादत दोनी होगी। नौ वर्षीय बाल गोबिंद राय ने साहसपूर्वक कहा, ''पिता जी! आपसे महान इस समय दुनिया में कौन है भला! आप ही इनकी समस्या का समाधान कर सकते हैं और जालिम की धर्मान्धता को नकार सकते हैं। गुरु जी अपने सुपुत्र के मुखारबिंद से यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और कश्मीरी पण्डितों को आश्वस्त करते हुए कहा- ''आप जाओ और औरंगजेब को हमारी तरफ से कहना कि हमारे धार्मिक मार्गदर्शक गुरु तेग बहादर है, यदि वह अपना धर्म-परिवर्तन कर मुसलमान बनने के लिए तैयार है, तो हम सब इसलाम धर्म कबूल कर लेंगे।

कुछ दिनों पश्चात् गुरु जी ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में संगत को पावन उपदेश देते हुए, ईश्वर-भक्ति हेतु प्रेरित करते हुए और निर्भयतापूर्वक जीवन-यापन करने की प्रेरणा देते हुए उनका उद्घोष वाक्य था :

*भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।।*
*कहु नानक सुनि रे मना*
*गिआनी ताहि बखानि।।* *(पन्ना १४२७)*

इतिहासकारों के अनुसार औरंगजेब द्वारा गुरु जी पर जनता में जागृति पैदा कर हुकूमत के विरुद्ध बगावत पैदा करने, जनता को अपने धर्म पर अडिग रहने का साहस भरने का दोष

लगाकर गुरु जी को आगरा में बंदी बना लिया गया। दिल्ली में नुकीली सलाखों वाले पिंजरे में गुरु जी को रखा गया। उन्हें भयभीत करने की हर कोशिश नाकामयाब रही। गुरु जी के समक्ष औरंगजेब की ओर से तीन शर्तें रखी गईं :--

पहली : इसलाम कबूल करो !

दूसरी : करामात दिखाओ !

तीसरी : शहादत हेतु तैयार हो जाओ !

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का निर्भीकतापूर्वक जवाब था-- ''धर्म-परिवर्तन हमें हरगिज प्रवान नहीं, करामात दिखाना ईश्वरीय इच्छा की अवहेलना है, अत: वह सम्भव नहीं। तीसरी तुम्हारी शर्त हमें प्रवान है।

गुरु जी के मुख से ये वचन सुनकर औरंगजेब आग बबूला हो गया। गुरु जी को पुन: पिंजरे में बंद कर दिया गया। अगले दिन फिर यही शर्तें दोहराई गईं।

गुरु जी ने पुन: दृढ़तापूर्वक वही जवाब दिया। औरंगजेब ने अपने दुष्ट इरादों पर पानी फिरता देख कर अन्य तरकीब सोची कि अगर श्री गुरु तेग बहादर साहिब के साथी सिक्खों को दिल दहला देने वाली यातनाएं देकर शहीद किया जाए तो शायद गुरु जी अपना इरादा बदल लें। अगले दिन सबसे पहले भाई मतीदास जी को आरे से चीरकर शहीद कर दिया गया। भाई दिआला जी को उबलते पानी की देग में बैठा कर तथा भाई सतीदास जी को रुई में लपेट कर जिंदा जला कर शहीद कर दिया गया। तीनों सिक्ख हंसते-हंसते शहीद हो गए। धन्य हैं गुरु के सच्चे सिक्ख ! यहां विचारणीय है कि जिस गुरु के सिक्ख इतने निष्ठावान और महान हैं, वो गुरु कितना महान होगा !

अगले दिन गुरु जी के समक्ष वही शर्तें एक बार फिर दोहराई गईं। गुरु जी का पुन: वही जवाब पाकर उनका शीश धड़ से अलग करने का आदेश जारी हुआ। गुरु जी की अन्तिम इच्छानुसार कुएं पर स्नान करने की अनुमति दी गई। स्नान के उपरान्त जपु जी साहिब का पाठ सम्पूर्ण हुआ। इस दौरान अद्‌भुत दृश्य देखकर जल्लाद भी आश्चर्यचकित था गुरु जी को शांतचित्त देखकर। न मृत्यु का भय, न कोई मायूसी। चेहरे पर आलौकिक नूर था, अद्‌भुत शांति एवं आनंद की अनुभूति थी। इतिहासकार लिखते हैं कि जैसे ही जल्लाद ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब की गर्दन पर वार किया धरती रक्त-रंजित हो गई। दिल्ली में भीषण तूफान उठा। सारा आसमान सिहर उठा। वास्तव में यह तूफान समय पाकर औरंगजेब के साम्राज्य को सड़क पर पड़े सूखे पत्ते की भांति उड़ा ले गया।

गुरु जी के पावन रक्त की एक-एक बूंद ने निर्बल एवं निराश-हताश लोगों में नवीन चेतना का संचार किया। जिस स्थान पर गुरु जी का पावन शीश गिरा वहां पर दिल्ली में गुरुद्वारा

श्री सीसगंज साहिब सुस्थित है। गुरु जी के पावन धड़ का अंतिम संस्कार श्रद्धालु सिक्ख भाई लक्खी शाह वणजारा ने अपना घर जला कर किया। वहां पर गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब सुशोभित है। भाई जैता जी गुरु जी के पावन शीश हो नमन कर, बड़े अदब के साथ उठाकर अति विकट परिस्थितियों में श्री अनंदपुर साहिब जा पहुंचे, जहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई जैता जी को सीने से लगाकर 'रंघरेटा, गुरु का बेटा' का खिताब प्रदान किया और गुरु-पिता के पावन शीश का दाह संस्कार किया।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत इसलिए विलक्षण एवं बेमिसाल है, क्योंकि उन्होंने समूची मानवता की धार्मिक स्वतन्त्रता के परिप्रेक्ष्य में अद्वितीय शहादत दीया। परिणामस्वरूप सारे जगत में शोक की लहर फैल गई तथा सुरलोक में जय-जयकार का उद्घोष हुआ। इस संदर्भ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पावन शब्द हैं :

*तिलक जंजू राखा प्रभ ता का।।*
*कीनो बडो कलू महि साका।।*
*साधन हेति इती जिनि करी।।*
*सीसु दीआ पर सी न उचरी।।१३।।*
*धरम हेत साका जिनि कीआ।।*
*सीसु दीआ पर सिररु न दीआ।।...*
*ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि*
*प्रभ पुर कीया पयान।।*
*तेग बहादर सी क्रिआ*
*करी न किनहूं आन।।१५।।*
*तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक।।*
*है है है सभ जग भयो*
*जै जै जै सुर लोक।।१६।।५।।*

*(बचित्र नाटक)*

ऐसे महान त्यागी, अद्वितीय शहीद तथा अपना सर्वस्व मानवता हेतु कुर्बान करने वाले धन्य-धन्य श्री गुरु तेग बहादर साहिब को कोटि-कोटि नमन! अंत में अपने हृदयोदगारों को अभिव्यक्त करना चाहूंगी :

*जिनकी शहादत एवं उपकारों की बदौलत*
*हमारी संस्कृति है जिंदा,*
*उनके बेमिसाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व*
*को न भुलाया करो!*
*उनके पावन उपदेशों को अमल में लाकर,*
*पताका धर्म की फहराया करो!*
*मनसा-वाचा-कर्मणा से कृतज्ञ हो,*
*सच्चे श्रद्धा-सुमन चढ़ाया करो!*
*मानव हो अगर तो मानवतावादी*
*दृष्टिकोण अपना कर,*
*कृतज्ञता उनके प्रति हृदय से दर्शाया करो!*
*खुद जीओ सकून से दूसरों को भी जीने दो,*
*प्रेम के गीत सदैव गुनगुनाया करो!*

# छोटे साहिबज़ादों की शहादत : सच को मिटाओगे तो मिटोगे जहान से

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

संसार में कोई भी स्थिर नहीं है। सभी को जाना है। जो कुछ कोई देकर जाता है उसे याद रखा जाता है। जो अपने प्राणों की कीमत पर निज विश्वास की रक्षा करता है वह आदरणीय हो जाता है। जो स्वयं मृत्यु का वरण कर समय को चुनौती देता है वह अमर हो जाता है। अपवाद स्वरूप ऐसे भी जन हुए जो प्रत्येक भय, लोभ, दुविधा को नकारते हुए अपने विश्वास के जीवन का भी उत्सर्ग कर गये। वे मानव सभ्यता का गौरव हो गये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी विश्व-इतिहास के अकेले नायक हैं जिनके पूरे परिवार को यह दुर्लभ सम्मान प्राप्त है। अद्‌भुत यह है कि सम्मान का यह इतिहास गुरु साहिब ने स्वयं लिखा। अविस्मरणीय बलिदानों की राह गुरु साहिब ने स्वयं चुनी, क्योंकि कोई अन्य विकल्प नहीं रह गया था। इसकी पुष्टि 'जफरनामा' से होती है। चुनाव, धर्म और जीवन के मध्य था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को धर्म चुनने में कोई दुविधा नहीं हुई, क्योंकि वे स्पष्ट थे-- *''राज साज हम पर जब आयो।।, जथा सकत तब धरम चलायो।।''* धर्म का उद्देश्य गुरु साहिब को आदि से ही स्पष्ट था। खंडे-बाटे से तैयार किया अमृत छका कर सभी सिक्खों के मन में यह दृढ़ करा दिया था। गुरु साहिब के चार साहिबजादों-- बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी, बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी का लालन-पालन भी इन्हीं मूल्यों की छांव में हुआ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चिड़ियों से बाज को तुड़वाने और सवा लाख वैरी के साथ एक अकेले ही लड़ जाने की भावना वाले लाखों सिक्ख तैयार कर दिये थे। उनके अपने सुपुत्र कैसे अदम्य साहस के स्वामी रहे होंगे, यह चारों साहिबजादों ने समय आने पर प्रकट कर सारे संसार को अवाक् कर दिया। साहस और वीरता से सिक्ख पंथ का परिचय नया नहीं था। श्री गुरु नानक साहिब ने आरंभता में ही सिर हथेली पर रख कर आने की बात कह दी थी। वह साहस का आध्यात्मिक पक्ष था। गुरु साहिबान जानते थे कि आत्मिक बल के साथ-साथ रण-बल भी आवश्यक होता है। इनके सुमेल से ही वीरता का जन्म होता है। श्री गुरु अरजन साहिब और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के मीरी-पीरी के सिद्धान्त ने साहस व

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

वीरता को संपूर्णता में प्रकट किया। नौ वर्ष की आयु में गुरुता पर विराजमान होते ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मीरी और पीरी के सिद्धान्त का प्रसार तेज गति से आरंभ कर दिया था। राजा राम सिंह से घोड़ों और राजा रत्न राय से हाथी की भेंट स्वीकार करना तथा सोलह वर्ष की आयु में नगाड़ा तैयार करना, एक विशेष दिशा में आगे बढ़ने का संकेत था। गुरु साहिब को आने वाली परिस्थितियों का पूर्ण आभास था। जब अवसर मिला तो पाउंटा साहिब नगर बसा कर वहां साहित्य की सरिता प्रवाहित की। जब भविष्य की स्थितियों की आहट सुनी तो श्री अनंदपुर साहिब लौट आये और नगर का विस्तार कर उसे सुरक्षित करने के उपाय किये। सवत् १७५६ की बैसाखी के दिन 'खालसा' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का अपूर्व निर्णय था। धर्म को प्रत्येक दृष्टि से प्रतिबद्ध समाज, जो गुरु नानक साहिब के काल में अस्तित्व में आया था, अपने स्वरूप की पूर्णता को प्राप्त हुआ।

इस महान घटना को एक वर्ष भी नहीं बीता था कि श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण होने आरंभ हो गये। सिक्खों ने अद्‌भुत वीरता का परिचय दिया। मुगलों के सभी आक्रमण विफल होते चले गये। इन परिस्थितियों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साहिबजादों का जन्म और लालन-पालन हुआ था। धर्म उन्हें घुट्टी में प्राप्त हुआ था। उन्हें धर्म समझना नहीं पड़ा और वीरता धारण नहीं करनी पड़ी थी। तप कर बने सोने को उसका मूल्य नहीं बताना पड़ता। बाबा अजीत सिंघ जी का जन्म सन् १६८७ में पाउंटा साहिब में, बाबा जुझार सिंघ जी का जन्म सन् १६९० में श्री अनंदपुर साहिब में, बाबा जोरावर सिंघ जी का जन्म सन् १६९६ में श्री अनंदपुर साहिब में और बाबा फतिह सिंघ जी का जन्म सन् १६९९ में श्री अनंदपुर साहिब में हुआ था। यह खालसा के सृजन की तैयारी और सृजन का काल था। इस प्रकार चारों साहिबजादे उन सभी अनमोल पलों के साक्षी बने जो एक विलक्षण इतिहास का सृजन करने वाले थे। बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी की माता का नाम माता जीत कौर (जीतो) जी था। बाबा फतिह सिंघ जी दस माह के ही थे, जब माता जीत कौर जी परलोक सिधार गये। बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी का लालन-पालन उनकी दादी माता गुजरी जी ने ही किया। श्री अनंदपुर साहिब चारों साहिबजादों का लालन-पालन भी देख रहा था और मुगलों के आक्रमणों का करारा जवाब भी दे रहा था। बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी बहुत छोटे थे इसलिये माता गुजरी जी की ज़िम्मेदारी अधिक हो गई थी। माता गुजरी जी को पति श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद पुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, परिवार और सिक्ख पंथ की सुरक्षा की चिंता पहले से ही थी।

निरंतर चलने वाले युद्धों के बाद मुगल सेना

ने थक-हार कर युद्ध बंद कर दिया और श्री अनंदपुर साहिब नगर की चारों ओर से घेराबंदी कर दी। यह घेराबंदी छः महीने तक चली। किले में खाने-पीने का सामान भी समाप्त होने लगा। मुगल बादशाह औरंगजेब के सेनापतियों ने कुरान की कसम खाकर प्रस्ताव किया कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और सिक्ख कुछ समय के लिए श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दें, जिससे उनकी प्रतिष्ठा बच जायेगी और घेरा उठा लिया जायेगा। शांति स्थापित करने के उद्देश्य से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मुगलों की कसम पर विश्वास किया और अपने परिवार व सिक्खों को साथ लेकर (पौष माह, संवत् १७६१ में) श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ दिया और कीरतपुर साहिब की ओर चल पड़े। ऐसा नहीं था कि गुरु साहिब किसी तरह से निराश थे। उनकी अद्भुत दृष्टि का परिचय अलह यार खान योगी के निम्न शेर से मिलता है :

*मशहूर है कि पाए गदा लंग भी नहीं।*
*अपने लिए खुदा की जमीं, तंग भी नहीं।*
*लोगों से हम को आरजूए जंग भी नहीं।*
*वरन कुई दलेरी में पासंग भी नहीं।*
*मजबूर हो गए तो लड़ाई दिखाएंगे।*
*फिर तेगे खालसा की सफाई दिखाएंगे।१२।*
*(शहीदानि वफा)*

धर्म-मार्ग पर चलने वालों के लिये कुछ भी असंभव नहीं होता। उन्हें किसी खास जमीन से मोह भी नहीं होता। सारा संसार उनका अपना होता है। श्री अनंदपुर साहिब छोड़ना, न छोड़ना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लिये कोई विचारणीय प्रश्न नहीं था। उनके मन में अकारण युद्ध की कोई इच्छा नहीं थी। गुरु-साहिब भली-भांति जानते थे कि वैरी उनके सिक्खों के मुक़ाबले पासंग भर ही हिम्मत नहीं रखता है। गुरु साहिब ने कहा कि जब वह विवश और विकल्पहीन हो जायेगा, तभी अपनी वीरता का प्रदर्शन करेंगे और तभी पता चलेगा कि खालसा का शौर्य कैसा होता है। उस समय किसे ज्ञात था कि यह अवसर तो शीघ्र ही आने वाला है और पराक्रम का नया इतिहास बनने वाला है। मुगलों की कुरान की कसम तो एक धोखा थी।

प्रोफेसर साहिब सिंघ ने लिखा है कि यह रात जब तक दुनिया है, मानव समाज के लिए रोशनी-मीनार की तरह याद की जायेगी, जब दस लाख की वैरी फौज के बीच से मात्र डेढ़ हजार सिक्ख प्राण हथेली पर रख कर गुजर रहे थे। इनमें गुरु साहिब के जिगर के टुकड़े दो छोटे साहिबजादे भी थे और वृद्ध माता भी थी। गुरु साहिब का काफिला कीरतपुर साहिब, जो श्री अनंदपुर साहिब से पांच मील दूर है, पहुंचा ही था कि मुगल सिक्खों पर आक्रमण के लिये अग्रसर हो गये। गुरु साहिब सरसा नदी तक जा पहुंचे। वे नदी पार कर रोपड़ जाना चाहते थे। मुगलों ने कसम तोड़ दी और विश्वासघात कर गुरु साहिब के दल पर आक्रमण करना आरंभ कर दिया। सिक्खों और मुगलों में झड़प होने लगी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सुरक्षित अपने

गंतव्य तक पहुंचना चाहते थे। गुरु साहिब ने भाई उदै सिंघ के नेतृत्व में पचास सिक्खों के एक दल को यह उत्तरदायित्व सौंपा कि वह मुगलों को आगे बढ़ने से रोके। सिक्खों की इस टुकड़ी का शाही टिब्बी पर मुगलों के साथ युद्ध आरंभ हो गया। भारी मुगल सेना के साथ यह युद्ध ढाई घंटे तक चला। इतनी कम संख्या होने के बावजूद ढाई घंटे तक, बिना समुचित अस्त्रों-शस्त्रों के, युद्ध के मैदान में डटे रहना विलक्षण था। इस बीच गुरु साहिब अपने दल सहित सरसा नदी के तट तक पहुंच चुके थे। रात व्यतीत हो चुकी थी और भोर होने को थी। बड़ी संख्या में शत्रु सेना के निकट आने की सूचना मिल रही थी। उसे रोकने के लिये भाई जीवन सिंघ जी के नेतृत्व में सौ सिक्खों का एक जत्था और तैनात कर दिया गया तथा शेष सिक्ख व परिवार के सदस्य सरसा नदी पार करने के लिये पानी में उतर गये।

सरसा नदी में बाढ़ आई हुई थी। नदी अपने पूरे उफान पर थी। पानी एकदम बर्फ़ीला-ठंडा हो गया था। ऐसे बर्फीले पानी के भयंकर बहाव में बहुत-से सिक्ख बह गये। संपत्ति और बहुमूल्य साहित्य भी पानी में डूब गया। सारा काफिला एक साथ नदी पार नहीं कर सका। सिक्ख बिखर गये। गुरु साहिब का अपना परिवार भी आपस में बिछड़ गया। माता गुजरी जी और बाबा जोरावर सिंघ जी व बाबा फतिह सिंघ जी के साथ जो सिक्ख तैनात किये गये थे, कुछ शहीद हो गये, कुछ नदी के बहाव में बह गये। अब उनके साथ बस, गुरु-घर का रसोइया गंगू ब्राह्मण ही बचा था। होशियारपुर क्षेत्र के बहुत-से ब्राह्मण उस समय रसोइये का कार्य करके ही परिवार की जीविका चलाते थे। गुरु साहिब के सुपत्नी माता सुंदर कौर (सुंदरी) जी व भाई मनी सिंघ जी आदि सिक्खों का अलग रुख हो गया। इधर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ बड़े साहिबजादे-- बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी बहुत ही कम संख्या में घुड़सवार सिक्खों का जत्था बचा था, जो एक भिन्न दिशा में बढ़ चला। इतिहासकारों के अनुसार जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी श्री अनंदपुर साहिब से निकले थे, तो उनके साथ लगभग डेढ़ हजार सिक्ख थे, जिनमें से लगभग सात सौ सिक्ख घुड़सवार थे, शेष पैदल थे। जन-बल की यह हानि असह्य थी, किन्तु फिर भी बचे हुए सिक्खों का उत्साह और समर्पण भरपूर था। गुरमति के महान विद्वान और बलवान योद्धा भाई मनी सिंघ जी माता सुंदर कौर जी आदि को लेकर दिल्ली की ओर चल पड़े। माता गुजरी जी व छोटे साहिबज़ादों के साथ कोई और नहीं था, बस, एक रसोइया था- गंगू ब्राह्मण। इस समय माता गुजरी जी पर सर्वाधिक उत्तदायित्व अचानक ही आन पड़े थे। हालात ये थे कि उन्हें अपने पुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में कोई ज्ञान नहीं था कि सरसा नदी पार करते हुए क्या

हुआ है। उन सैकड़ों सिक्खों का कोई हालचाल नहीं था जिन्हें वे पुत्रवत स्नेह करती थीं। उन्हें अपने साथ के बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी की अधिक चिंता थी। भविष्य की आशंकाओं ने उन्हें घेर लिया था। माता गुजरी जी ने अपने पति श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शाहादत का समय देखा हुआ था, जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आयु मात्र नौ वर्ष थी। उस स्थिति का सामना माता गुजरी जी ने अति साहस और धैर्य से किया था। वह साहस और धैर्य उनमें आज भी था। चिंता थी तो यह कि जिन सिद्धांतों के लिये पति ने बलिदान दिया, पुत्र ने सारा जीवन लगाया, उन सिद्धांतों पर इस विषम स्थिति में वे भी खरी उतरें और छोटे साहिबजादों के भी दृढ़तापूर्वक पालन योग्य सिद्ध होने में सहायक हों। बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी भी इस समय अपने परिवार और सिक्खों के साथ होने की कामना आवश्य कर रहे थे, किन्तु सहज थे और किसी भी भय से मुक्त थे।

प्रोफेसर साहिब सिंघ के अनुसार, सरसा नदी के बहाव में बह जाने और तल पर रोड़े आ जाने से माता गुजरी जी, दोनों छोटे साहिबजादे और गंगू , बाकी लोगों से बहुत दूर निकल गए थे। पीछे शत्रु सेना के आ जाने का भी खतरा था। साथ के लोगों को ढूंढ पाना मुश्किल हो गया था। गंगू को इस क्षेत्र की जानकारी थी। उसका गांव खेड़ी यहां से बीस मील दूर मोरिंडा के पास था। वह शीघ्रता दिखाते हुए माता जी और छोटे साहिबजादों को गांव खेड़ी, अपने घर ले आया। माता गुजरी जी को भी इससे अधिक स्वीकार्य कोई विकल्प नहीं लगा था। श्री अनंदपुर साहिब से निकलने के बाद का सारा लंबा समय तनाव एवं थकान का था और अब गंगू के घर आकर माता गुजरी जी और छोटे साहिबजादों को विश्राम का अवसर प्राप्त हुआ था। माता जी के पास अमूल्य जेवरों-मुहरों आदि का एक डिब्बा था, जिसे देख गंगू बदनीयत हो गया। रात्रि में जब माता गुजरी जी और दोनों छोटे साहिबजादे निद्रा में थे, गंगू ने वह डिब्बा चुरा लिया :

*कहते हैं जब कि वक्त हुआ आधी रात का।*
*जी में किया न खौफ कुछ,*
*आका की मात का।*
*मुहरों का बदरा और वुह डिब्बा उड़ा गया।*
*धोखे से ब्राहमण वह खजाना चुरा गया।५९।*
*(शहीदानि-वफा)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के रहम पर पलने वाला गंगू उनसे ही विश्वासघात कर गया। उसे अपने स्वामी की माता का भी खौफ नहीं रहा। उसने माता जी का धन और जेवरों का डिब्बा चुरा लिया। प्रातः जब माता गुजरी जी जागीं तो डिब्बा गायब मिला। वे समझ गईं कि यह गंगू का ही कर्म है। माता जी ने उससे कहा कि ''जो सामान तुमने चोरी किया है वह तुम्हारे लिये हराम हो गया है। तुम मांग लेते तो मैं

सहर्ष दे देती। दान देना तो मेरा स्वभाव है। धर्म हेतु मैं अपने पति का शीश दे चुकी हूँ और अपना सिर भी दे सकती हूं।''माता गुजरी जी की बातें सुन कर गंगू क्रोध से भर उठा और मोरिंडा जाकर सरहिंद के नवाब के कर्मचारियों को माता गुजरी जी एवं दोनों छोटे साहिबजादों के बारे में सूचना देकर उन्हें गिरफ्तार करा दिया। उन्हें गिरफ्तार कर सरहिंद ले जाया गया और नवाब के हुक्म पर किले के एक बुर्ज में रखा गया।

चमकौर का युद्ध खत्म होने के बाद नवाब वजीर खान सरहिंद लौट आया था। चमकौर के युद्ध में बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी और चालीस सिक्ख मुगल सेना को लोहे के चने चबवाते हुए शहीद हो चुके थे। माता गुजरी जी और छोटे साहिबजादों को इसका कोई ज्ञान नहीं था। श्री अनंदपुर साहिब छोड़े हुए तीन दिन हो चुके थे। परिस्थितियां सामान्य हों, तब भी कुछ घंटों तक परिजनों, प्रियजनों का समाचार न मिले तो मनुष्य व्यग्र हो उठता है। यहां तो परिस्थितियां असामान्य ही नहीं, अपूर्व थीं। चारों ओर संकट ही संकट था और वैरी सशक्त था। घोर ठंड पड़ रही थी। वृद्ध माता जी और नन्हें साहिबजादे जिस बुर्ज में रखे गये थे वहां ठंड का सर्वाधिक प्रकोप हड्डियों को कड़काने वाला था। भविष्य अनिश्चय के गर्भ में था। एक सहारा था वाहिगुरु का, जिसने तीनों के हौसले डिगने नहीं दिये थे। इसका प्रमाण अगले दिन मिला जिससे सारा संसार आज भी अचंभित हो जाता है।

प्रातः काल जब नवाब वजीर खान की कचहरी लगी तो उसने अपने दरबारी सुच्चानंद को गुरु साहिब के दोनों साहिबजादों को पेश करने का हुक्म दिया। सुच्चानंद जब सैनिकों के साथ बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी को कचहरी में पेश करने के लिये आया तो वे तत्काल तैयार हो गये। यह इतिहास का तथ्य मात्र है कि उस समय साहिबजादों की आयु मात्र क्रमशः नौ वर्ष और पांच वर्ष थी। सिद्धान्त और विश्वास मन के होते हैं, तन के नहीं। आयु अधिक भी हो फिर भी धर्म के लिये ऐसी तत्परता नहीं आ सकती, यदि मन की परिपक्वता न हो। बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी का लालन-पालन मन की परिपक्वता का था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पल भर की कृपा-दृष्टि ही जन्मों-जन्मों के पाप, अज्ञान से मुक्त कर, उद्धार कर देने वाली थी। बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी का तो जन्म ही गुरु साहिब के घर हुआ था। वे उन महत्वपूर्ण पलों के निकट के साक्षी थे जब गुरु नानक साहिब का सिक्ख पंथ पूर्णता को प्राप्त हो रहा था और गुरु का सिक्ख एक सिंघ का स्वरूप धारण कर रहा था। साहिबजादों ने श्री अनंदपुर साहिब में युद्धों का लंबा दौर और परिस्थितियों को तेजी के साथ बदलते भी

देखा था। जो नहीं बदला था वो था-- सिक्खों का विश्वास और पंथ के प्रति समर्पण। वे जान चुके थे कि मन का समर्पण और विश्वास ही सबसे बड़ा बल है जो निर्भय और अजेय बनाता है। आज बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी उसी बल से भरपूर हो नवाब की कचहरी में जाने को नि:संकोच तैयार हुए थे। माता गुजरी जी पल भर के लिए भावुक भले ही हुए होंगे किन्तु उन्हें अनुभव था कि ऐसी विकट परिस्थितियों को सिक्ख सहज बना देना जानते हैं। सुच्चा नंद और अन्य दरबारी अनुमान लगा रहे थे कि गुरु साहिब के लाल तो नवाब वजीर खान के सामने पेश होने के खौफ से ही सहम जायेंगे। बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी जिस आत्मविश्वास भरी चाल से कचहरी जाने के लिये निकले माता गुजरी जी को अवश्य विश्वास हो गया होगा कि आज नवाब की कचहरी में श्री गुरु नानक साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पंथ का निशान ऊंचा होने वाला है। दोनों साहिबजादे जिस आत्मविश्वास और निडरता से नवाब के सामने आये, बहुतों के चेहरे उतर गये। नवाब वजीर खान ने उन्हें भयभीत करने का प्रयास किया, प्रलोभन दिये कि वे इसलाम स्वीकार कर लें। वजीर खान इस तरह गुरु साहिब को पराजित न कर पाने की ग्लानि को कम करना चाहता था। साहिबजादों ने नवाब की धमकियों के लिये भरी सभा में उसे ललकारा :

*सतगुर के लाडलों ने दिया रुअब से जवाब।*
*आती नहीं शर्म है जरा*
*तुझ को ऐ नवाब!...८०।*

*(शहीदानि-वफा)*

साहिबदजादे अपने निश्चय पर अटल रहे। यह नवाब वजीर खान की सबसे करारी हार थी। जिन्हें वह बच्चे समझ रहा था वह उससे बड़े योद्धा सिद्ध हुए थे। साहिबजादे वापिस आ गये और अपनी दादी माता गुजरी जी को सारा हाल सुनाया। माता गुजरी जी एक पल छोटे साहिबजादों को दुलारतीं तो दूसरे पल शेष परिवार की याद में खो जातीं। अगले दिन दोनों साहिबजादों को पुन: वजीर खान के सामने लाया गया। उन्हें मौत का भय दिया गया। साहिबजादों ने मौत का भय भी मानने से इन्कार कर दिया :

*हम साथ चाहते हैं अजल के दहन में जाएं।*
*मर जाएं भी तो कब्र में ऐक ही कफ़न में जाए।८६।*

*(शहीदानि-वफा)*

नवाब वजीर खान को चुनौती देते हुए बाबा जोरावार सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी ने कहा कि वे मौत से नहीं डरते हैं। मरना उन्हें स्वीकार है। बस, एक ही इच्छा है कि धर्म व ईमान का महल डिगने न पाए।

संसार में बहुत सी कुर्बानियां हुई होंगी किन्तु इस कामना से दी जाने वाले कुर्बानी का यह एक ही इतिहास था जो न पहले कभी लिखा गया और न लिखा जायेगा। यह तभी संभव था कि बाबा फतिह सिंघ जी जैसे

बहादुर सुपूतों ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के घर जन्म लिया था।

प्रोफेसर साहिब सिंघ ने लिखा है कि वजीर खान श्री अनंदपुर साहिब और चमकौर के युद्धों से उपजी निराशा से खीझा हुआ था। उसके सिर पर शैतानी क्रोध सवार था। इन बाल्यावस्था वाले शेर बच्चों से भी उसे मुंह की खानी पड़ी तो उसने इनके कत्ल का हुक्म दे दिया। उस समय वहां मलेरकोटला का नवाब भी उपस्थित था जो वजीर खान के साथ ही चमकौर के युद्ध से लौटा था। उसने इस हुक्म का विरोध किया, किन्तु सुच्चा नंद आदि ने इस कुकृत्य को सही ठहराया।

यह वजीर खान की जीत नहीं, सबसे शर्मनाक हार थी। बाबा जोरावार सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी उसकी हिरासत में थे। उन्हें किसी भी तरह की सहायता पहुंचने की कोई आशा नहीं थी। बड़ी संख्या में सिक्ख शहीद हो चुके थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सिक्खों को संगठित कर नई ताकत जोड़ने की योजना में लगे थे। सभी परिस्थितियाँ वजीर खान के अनुकूल थीं, फिर भी नौ वर्ष और पांच वर्ष के साहिबजादों को वह एक क्षण के लिये भी धर्म के मार्ग से विचलित नहीं कर सका था। उसे न तो धर्म का ज्ञान था, न सच की शक्ति का एहसास था।

वजीर खान के हुक्म के अंतर्गत दोनों साहिबजादों को दीवार में जिंदा चिनवा दिया गया। स्वयं को हंसते हुए दीवार में चिनवा कर दोनों साहिबजादों ने संसार में सिक्ख पंथ की नींव को एक नया आधार प्रदान किया :

*हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।*
*सिक्खी की नींव हम हैं*
*सरों पर उठा चले।. . . १०९।*

*(शहीदानि-वफा )*

बाबा जोरावार सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी की शहीदी की सूचना जब माता गुजरी जी को मिली तो उन्हें लगा कि परिवार की तीन पीढ़ियों के प्रति उनके जो कर्तव्य थे वे पूर्ण हो चुके हैं। इस संतोष को मन में धारण कर माता गुजरी जी भी परमात्मा के चरणों में जा बसे। इन तीन शहादतों ने आने वाले समय का रुख पूरी तरह से बदल दिया। शीघ्र ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने नांदेड़ साहिब से आकर सरहिंद पर धावा बोला और वजीर खान को मार कर पूरे नगर को तहस-नहस कर दिया। सिक्खों का शौर्य एक बार पुनः आकाश पर भरी दोपहर का सूर्य बन कर प्रकट हुआ।

सिक्ख अस्मिता का इतिहास है कि वह सदैव अजेय रही है, क्योंकि उसमें सच की ऊर्जा है, जो सृष्टि के पूर्व से है और सृष्टि के अंत तक रहने वाली है। धर्म और सच पर दृढ़ रहना ही अमरत्व है और यही गुरु का सिक्ख होना है।

# चमकौर की जंग का विलक्षण इतिहास

*-बीबी मनजीत कौर लक्खपुर**

चमकौर की गढ़ी की जंग का सिक्ख इतिहास में विलक्षण स्थान है। सिक्ख इतिहास इस बात की गवाही भरता है कि दसम पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को दिसंबर १७०४ ई. में श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ने के उपरांत कसमों-वादों से पलटे फ़रेबी राजाओं के साथ भयंकर सर्दी में सरसा नदी के किनारे जंग करनी पड़ी। यह जंग सिक्ख इतिहास में सरसा की जंग के नाम से प्रसिद्ध हुई। पहाड़ी राजाओं द्वारा खाई गाय व जनेऊ की कसमों और मुगल हाकिमों द्वारा खाई कुरान की कसमों को तोड़ने के जवाब में एक पत्र 'ज़फ़रनामा' के रूप में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने महीउद्दीन आलमगीर औरंगजेब को सत्य-असत्य के अंतर को समझने की जानकारी देने के लिए लिखा। उसके बंद १८, ४६, ४७ इस प्रकार बयान करते हैं :

*कसम मुसहफे खुफ़ीयह गर ईं खरम।।*
*न फउजे अज़ीं जेरि सुम अफ़गनम।।१८।।*

''औरंगजेब! तेरी जगह पर मैं होता तो खुदा को साक्षी मान कर और कुरान की कसम खाकर कभी भी उसे तोड़ता न और न ही कभी अपनी फ़ौज को हमलावर होने देता।''

*न ईमां परसती न अउज़ाइ दीं।।*
*न साहिब शनासी न मुहम्मद यकीं।।४६।।*

''औरंगजेब! धर्म-ईमान वाली तेरे में कोई बात नहीं है। न तू खुदा को जानता है और न ही मुहम्मद साहिब पर तेरा यकीन है।''

*हरआंकस कि ईमां परसती कुनद।।*
*न पैमां ख़ुदश पेशो पसती कुनद।।४७।।*

*''जो मनुष्य ख़ुदापरस्त बन कर ईमान पालता है वह अपने किये वादे से कभी इन्कारी नहीं होता।''*

गुरु साहिब के श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने से पहले मुगलों ने श्री अनंदपुर साहिब का घेरा इतना सख़्त कर दिया था कि अंदर अन्न-पानी जाना भी बहुत मुश्किल हो गया था, जिस दौरान प्रशादी हाथी और बहुत-से सिंघों के घोड़े दम तोड़ गए थे। गुरु साहिब के श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के पश्चात् पहाड़ी राजाओं और औरंगजेब द्वारा कुरान की खाई कसमों, जिसमें औरंगजेब द्वारा लिखा था :

*''कि तशरीफ दर कसबह कांगड़ कुनद।।*
*वज़ां पस मुलाकात बाहम शबद।।५८।।*
*न जर्रह दरीं राहि ख़तरह तुरासत।।*
*हमह कौमि बैराड़ हुकमि मरासत।।५९।।*

**गांव एवं डाकखाना : लक्खपुर। फोन : ९८१५६-१४९५६*

*बिआ ता सुखन ख़ुद जबानी कुनेम।।*
*बरूए शुमा मिहरबानी कुनेम।।६०।।*

पर विचार कर जब गुरु साहिब ने श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने का निर्णय किया तो कुरान और गाय की खाई कसमों व वादों को तोड़ कर पीठ पीछे वार करने हेतु आ चढ़ी शाही फ़ौज और पहाड़ी राजाओं के साथ गुरु के ख़ालसे को सरसा नदी के किनारे जंग करनी पड़ी। इस जंग में भाई उदे सिंघ, भाई रणधीर सिंघ, भाई रणजोध सिंघ, भाई जीवन सिंघ रंघरेटा तथा अन्य बहुत-से सिंघ गर्मजोशी के साथ शत्रु के साथ जूझते हुए शहादत प्राप्त कर गए। बहुत-से सिंघ सरसा नदी के पानी के तीव्र बहाव की भेंट चढ़ गए। यहीं पर ही गुरु साहिब अपने छोटे साहिबजादों और माता जी से बिछड़ गए। उस जगह पर गुरुद्वारा परिवार विछोड़ा साहिब सुशोभित है।

परिवार से बिछड़े हुए छोटे साहिबज़ादों और माता गुजरी जी को मौके का फ़ायदा उठा कर गुरु साहिब का रसोइया गंगू अपने गाँव सहेड़ी (खेड़ी) ले गया। इस फ़रेबी ने मुहरों के लालचवश होकर गुरु-घर के साथ धोखा किया। गुरु साहिब के छोटे साहिबज़ादे और माता जी को मोरिंडा के थानेदार जानी खान व मानी खान के हवाले कर दिया।

सरसा की जंग के पश्चात गुरु साहिब जब चमकौर गाँव पहुंचे। उस समय गुरु साहिब के साथ श्री अनंदपुर साहिब से चले जत्थे में से दोनों बड़े साहिबज़ादों के अलावा ४० के करीब सिंघ शेष बचे थे।

चमकौर साहिब आकर गुरु साहिब ने गाँव के बाहर राय जगत सिंघ के बाग़ में अपना पड़ाव किया। इस स्थान पर गुरुद्वारा दमदमा साहिब सुशोभित है। रात के समय आप जी ने छोटे-से किले के आकार की कच्ची हवेली रूपी गढ़ी में विश्राम किया।

गुरु साहिब के सरसा किनारे से बच निकलने और चमकौर साहिब में रुकने की ख़बर शाम तक हुकूमत के कानों तक पहुँच गई थी। गुरु साहिब और गुरु के ख़ालसे का हुकूमत पर भय होने के कारण, रातो-रात नाहर खान और ख्वाजा जफर बेग के नेतृत्व में अनगिनत फ़ौज ने चमकौर को आ घेरा।

सूर्योदय होते ही दुश्मन आँधी की तरह चमकौर की गढ़ी के बड़े दरवाज़े की तरफ बढ़ा। एक तरफ़ मात्र गिनती के (४०) भूखे-प्यासे सिंघ और दूसरी तरफ़ अनगिनत शत्रु दल की फौज ने बेशक दोपहर तक अनेक बार अपनी पूरी ताकत लगा कर गढ़ी पर हमले किए, मगर हर बार उनको हार का मुँह देखना पड़ा। नाहर खान को तो गुरु साहिब के एक ही तीर ने चित्त कर दिया। जफर बेग ने दीवार की ओट लेकर जान बचायी। इस घमासान जंग में बहुत-से सिंघ शहादत प्राप्त कर गए। इस बात को गुरु साहिब 'ज़फ़रनामा' में इस प्रकार स्पष्ट करते हैं :

*हम आख़िर चिह मरदी कुनद कारज़ार।।*

*कि बर चिहल तन आयदश बे शुमार ।।४१।।*

चमकौर की गढ़ी की जंग में गुरु साहिब के साहिबज़ादों की रौंगटे खड़े कर देने वाली अद्वितीय शहादत के साथ तीन प्यारों सहित अनेक अन्य सिंघों की शहादत हो गई। बेशक पुत्र भी शहीद हो गए, लेकिन गुरु साहिब पुत्रों की शहादत से रत्ती भर भी विचलित नहीं हुए, क्योंकि पुत्रों की भांति प्यार वे अपने ख़ालसा से भी करते थे। गुरु साहिब पुत्रों की शहादत पर भी अकाल पुरख का शुक्राना करते हैं।

सूर्य अस्त होते ही जब जंग बंद हुई, गढ़ी में गिनती के सिंघ शेष बचे थे, जिनमें शहीद पिता का पुत्र और शहीद पुत्रों का पिता जंग में जूझने के लिए तैयार-बर-तैयार था। जब रात्रि का दूसरा पहर हुआ तो सिंघों ने दुश्मन का घेरा देखा और दूसरी तरफ ऐसे कठिन हालात में गुरु साहिब के नेतृत्व की ज़रूरत को महसूस किया। श्री अनंदपुर साहिब में अमृत छकाते समय ख़ालसा को प्रदान किए गए अधिकारों के मद्देनज़र पाँच प्यारों के रूप में उपस्थित सिंघों ने गुरु जी के सम्मुख होकर गुरु साहिब को चमकौर की गढ़ी छोड़ जाने का आदेश दिया। प्रसिद्ध कवि स. करतार सिंघ बलग्गण ने गढ़ी छोड़ते समय के हालात को अति सुंदर ढंग से काव्यबद्ध किया है :

*साडे जिहे लक्खां पैदा करेंगा तूं,*
*पासा असां कोई जगत दा थंमणा नहीं।*
*पर जे तू ना रहिउ दशमेश दूले,*
*गोबिंद सिंघ मुड़ के फेर जंमणा नहीं।*
*तूं हैं गुरू ते खालसा गुरू तेरा,*
*उहदा हुकम परताण दी आगिआ नहीं।*
*तेरी जान अमानत है ख़ालसे दी,*
*उसनूँ किते अवाण दी आगिआ नहीं।*

आगे का दृश्य कवि की कलम इस प्रकार कलमबद्ध करती है :

*गोबिंद किहा गंभीरता नाल सिंघो!*
*की मैं पिट्ठ विखा के नट्ठ जावां?*
*जिन्हां मौत तीकर मेरा साथ दित्ता,*
*मैं उह पुत्त मरवा के नट्ठ जावां ?*
*चार दिनां दी कूड़ी जिही ज़िंदगी लई,*
*मैं हुण घोड़ा भजा के नट्ठ जावां ?*
*अमृत दे के जिन्हां नूं अमर कीतै,*
*मैं उह पुत्त मरवा के नट्ठ जावां?*

चाहे गुरु साहिब जंग में शत्रु के साथ जूझते हुए शहादत प्राप्त करना चाहते थे, मगर कलगियां वाले ने ख़ालसा पंथ के निर्णय के आगे सिर झुकाया और यह फरमाया-- ''खालसा जी! इस समय आप गुरु-प्राप्त रुतबे के बराबर हो। आप में और गुरु में जरा भी भेद नहीं है, इसलिए आपका हुक्म सिर-माथे प्रवान है।''

*सुणिआ गुरू ने 'गुरू' का हुकमनामा,*
*छेती सीस झुका के उट्ठ टुरिआ।*
*हत्थ जोड़ दित्ते अक्खां भर आईआं,*
*अते हुकम बजा के उट्ठ टुरिआ।*
*भेटा पंथ दी कलगियां जिहगे कीते,*
*बाज उंगली लाके उट्ठ टुरिआ।*
*गोबिंद सिंघ आपे गुरू आप चेला,*

*जगत तांई विखा के उट्ठ टुरिआ।*

गुरु-पिता ने खालसा पंथ को श्रेष्ठता प्रदान कर एक ऐसा विलक्षण इतिहास सृजित किया, जिसकी मिसाल विश्व के इतिहास में कहीं नहीं मिलती कि गुरु ने अपने शीश पर सजी शहंशाही की प्रतीक हीरों से जड़ी हुई कलगी अपने शीश से उतार कर अपने हाथों से अपने किसी मुरीद के शीश पर सजायी हो। यह गुरु नानक साहिब के दर की महानता है कि इस दर पर मात्र कर्म-आचरण की परख की जाती है। जिन गुणों की परख के अंतर्गत दसम पातशाह ने अपने बचपन के मित्र, हमशक्ल और हम उम्र भाई संगत सिंघ, जो गुरु साहिब से लगभग चार महीने छोटे थे और गुरु-घर से लगाई जाती प्रत्येक सेवा को शीश झुका कर स्वीकार करते थे, जो साहसी वीर योद्धा भी थे, को गुरु साहिब ने धर्म-युद्ध की इस सेवा के लिए बहुमूल्य सम्मान प्रदान कर अपने सीने से लगाया। अपनी हीरों जड़ी हुई कलगी, भाई संगत सिंघ के शीश पर सजायी। अपने शस्त्र-वस्त्र उन्हें प्रदान कर धर्म-युद्ध के लिए प्रोत्साहन दिया। गुरु पातशाह ने श्री अनंदपुर साहिब की पवित्र भूमि पर खड़े होकर सिक्खों के प्रति जो वचन किये थे, उन्हें अमल में लाया गया :

*नाउं गरीब निवाज हमारा,*
*है जग महि प्रसिद्ध अपारा।*
*सो सफला जग मैं तब थै हैं,*
*लघू जातन को बडपन दै हैं।*
*जिन की जात और कुल माहीं,*
*सरदारी नहि भई कदांही।*
*इन ही को सरदार बनावों,*
*तबै गोबिंद सिंघ नाम सदावों।*

'गुरबिलास पातशाही १०वीं'' में भाई कुइर सिंघ लिखते हैं :

*. . . पुनि, कलगी औ जिगा सुखदानी।*
*संगत सिंघ है नाम जिसै कछु, ता बपु है करि स्त्रि गुर सानी।।२९।।*
*मुकट दयो अस बैन कहै,*
*''तुम मो पर जाइ अबै सुन पाही।*
*मैं पछ आवहु काम रहै कछु'',*
*थापी दई तिन को बर बाही।*
*आपने आसन ताहि बैठाइ के,*
*कीन खसी अतिसै सुख माही।*
*द्वै कर बान करो खल खंडन,*
*जावत हैं हम मालव ताही।।३०।।*

''भाई संगत सिंघ! आपने मेरे बाद मेरी पोशाक में मेरे मोर्चे वाले आसन पर बैठना। सूर्योदय होते ही जब मुग़ल फौज गढ़ी पर हमला करे तो शत्रु का डट कर मुकाबला करना। जीते-जी शत्रु के हाथ मत आना। मैदान-ए-जंग में दोनों हाथों से तीर चला कर दुष्टों का सफाया करना है। मैदान-ए-जंग में शत्रु के विरुद्ध जूझते हुए शहादत प्राप्त करना।''

धर्म-युद्ध के प्रति गुरु साहिब के विचार 'ज़फ़रनामा' में इस प्रकार अंकित हैं :

*चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ।।*

*हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत।।२२।।*

जब सिंघों की विनती पर गुरु साहिब चमकौर की गढ़ी को अलविदा कह कर चले थे तो उस समय उनके साथ मात्र तीन सिंघ थे। भाई मान सिंघ के अलावा बैसाखी पर साजे गए पाँच प्यारों में से दो प्यारे-- भाई धरम सिंघ व भाई दया सिंघ इनमें शामिल थे।

चमकौर की जंग से पहले भाई संगत सिंघ ने बस्सी कलाँ से साहिबज़ादा अजीत सिंघ के साथ मिलकर एक ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ाने, भंगाणी का युद्ध, अगंमपुरा की लड़ाई, सरसा की जंग में पूरी बहादुरी और शूरवीरता का सबूत दिया था। भाई संगत सिंघ को गुरु साहिब की भांति दोनों हाथों से तीर-अन्दाज़ी करने में महारत हासिल थी। यह महारत भाई संगत सिंघ को गुरु साहिब के बचपन के साथ से प्राप्त हुई थी। दूसरा, गुरु साहिब द्वारा किला अनंदगढ़ साहिब से जारी किए गए हुकमनामे को शीश झुकाते हुए भाई संगत सिंघ ने मालवा में गुरु-घर के सेवक बन कर पूरी तनदेही के साथ सिक्खी का प्रचार किया था।

सुबह जब मुग़ल फौज ने चमकौर की गढ़ी को घेरा डाला तो भाई संगत सिंघ द्वारा पहनी हुई गुरु साहिब वाली पोशाक और कलगी ने बार-बार मुगलों को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के होने का भ्रम पैदा किया। वह ताबड़तोड़ हमले करती रही। भाई साहिब ने भी पूरी बहादुरी दिखाते हुए मुगलों का डट कर मुकाबला किया। कृपाण, तीरों और नेजों का प्रयोग कर मुगलों की लाशों के ढेर लगा दिए। ज़ख्मी होकर भी भाई संगत सिंघ अंतिम समय तक गुरु फतह के जयकारे गजाते रहे। ज़ालिमों के विरुद्ध युद्ध के लिए गुरु साहिब के फलसफे पर चलते हुए दुश्मनों के साथ चमकौर की अद्वितीय जंग लड़ कर गुरु-आशय को सरअंजाम देकर अंततः शहादत प्राप्त कर गए।

इस प्रकार चमकौर की जंग में दसम पिता ने चमकौर की गढ़ी का विलक्षण इतिहास सृजित किया। इसकी मिसाल संसार की किसी भी ऐतिहासिक जंग में नहीं मिलती, जो बिना किसी लोभ, लालच के लड़ी गई हो। सिक्ख धर्म के पौधे को सदा हरा-भरा रखने के लिए एक बाप ने अपने पुत्रों के ख़ून के साथ उस पौधे को सींचा। उस पौधे की ख़ातिर गुरु-पिता ने पुत्रों के साथ अपने नादी पुत्रों (ख़ालसा) को कुर्बान किया। 'गंजि-शहीदां' में अल्लाह यार खान योगी लिखते हैं :

*बस, एक हिंद में तीर्थ है, यात्रा के लिए।*
*कटाए बाप ने बच्चे जहाँ, खुदा के लिए।*
*चमक है मिहर की चमकौर! तेरे ज़र्रों में।*
*यहीं से बन के सितारे गए*
*सम्मा के लिए।... ११७।*

# चमकौर की गढ़ी के शहीद : भाई संगत सिंघ

*-स. तरलोचन सिंघ**

सूर्य अस्त होने पर जब चमकौर की जंग थमी तो गढ़ी में गिनती के ११ सिंघ शेष बचे थे, जिनमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सहित सभी सिंघ जंग में जूझने के लिए तैयार-बर-तैयार थे, मगर गढ़ी में उपस्थित सिंघों द्वारा पहले विनती करने और फिर आदेश जारी करने पर गुरु साहिब ने गढ़ी छोड़ जाने का पाँच प्यारों का आदेश स्वीकार कर लिया, क्योंकि सिंघ यह समझते थे कि यदि गुरु साहिब शारीरिक वजूद कायम रहा तो वे कठिन से कठिन समय में भी पुनः सिक्ख सेना संगठित कर लेंगे। सिंघों के अनुसार गुरु साहिब की असमय शहादत कौम के लिए हानिकारक सिद्ध होगी। अतः गढ़ी में उपस्थित सिंघों ने गुरु साहिब को १७५६ बिक्रमी की बैसाखी पर श्री अनंदपुर साहिब में अमृत छकाते समय पाँच प्यारों (सिंघों) को प्रदान की गई महानता के अंतर्गत नम्रता सहित मुखातिब होकर चमकौर की गढ़ी छोड़ जाने का आदेश किया, तो पंथ के वाली ने पाँच सिंघों के इस आदेश को स्वीकार कर लिया। गुरु पातशाह ने खालसा पंथ को महानता प्रदान कर एक आलौकिक इतिहास सृजित कर दिया। अपने बचपन के साथी, हमशक्ल और हमउम्र भाई संगत सिंघ, जो हर वक्त विनम्र होकर गुरु-घर की सेवा में उपस्थित रहते थे, को प्यारे सिक्ख होने का खिताब प्रदान कर अपने सीने से लगाया। अपनी कलगी भाई संगत सिंघ के शीश पर सजायी और अपने शस्त्र-वस्त्र उन्हें प्रदान किये व प्रोत्साहन दिया तथा कहा-- ''भाई संगत सिंघ! आप मेरे बाद मेरी पोशाक में मेरे मोर्चे वाले आसन पर बैठना और सूर्योदय होने पर जब मुग़ल फौज गढ़ी पर हमला करे तो डट कर मुकाबला करना। जीते-जी शत्रु के हाथ मत लगना। मैदान-ए-जंग में शत्रु के विरुद्ध जूझते हुए शहादत प्राप्त करना।'' जंग बाबत आप जी का फ़ैसला 'ज़फ़रनामा' के शेयर २२ में इस प्रकार है :

*चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत।।*
*हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत।।*

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने कहलूर के राजा से गाँव माखोवाल की ज़मीन ख़रीदी जो सतलुज दरिया के किनारे पर थी। वहां पर श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने श्री अनंदपुर साहिब नामक नगर बसाया था, जिसकी नींव रखने का शुभ कार्य बाबा बुड्ढा जी के पोते बाबा गुरदित्ता जी ने संपूर्ण किया था। इस नगर का नाम पहले 'चक्क नानकी' और बाद में 'श्री अनंदपुर साहिब' प्रसिद्ध हुआ। यहीं पर भाई रणिया जी और बीबी अमरो जी ने गुरु साहिब की सेवा में अपना जीवन लगाया। यहाँ से बीबी अमरो जी और भाई रणिया जी ने सिक्खी के प्रचार के लिए

**गांव- रुड़का खुर्द, तहसील- फिल्लौर, जिला- जलंधर। फोन : ९८१५२-२८२२०*

धर्म प्रचार की यात्रा श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की रहनुमाई में आरंभ की, जिसमें माता नानकी जी, माता गुजरी जी, मामा किरपाल चंद, दीवान दुर्गा मल्ल, दुर्गा दास आदि महापुरुषों के साथ-साथ बीबी अमरो जी और भाई रणिया जी भी गुरु- घर के सेवक के तौर पर शामिल थे। प्रचार के तौर पर मालवा देश के बाँगर क्षेत्र मथुरा, कुरुक्षेत्र, आगरा, कानपुर, इलाहाबाद आदि अनेक स्थानों की यात्रा करते हुए पटना शहर (बिहार) पहुँचे, जहाँ श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब अपने परिवार और गुरु की संगत, जिसमें भाई रणिया जी और बीबी अमरो जी भी शामिल थे, को सेवा-संभाल की ज़िम्मेदारी सौंप कर ढाका, असाम के दौरे पर चले गए थे। पटना साहिब में ही गुरु साहिब की कृपा से दसम पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश २३ पौष, १७२३ बिक्रमी से चार महीने बाद बीबी अमरो जी की कोख से भई रणिया जी के घर बाबा संगत सिंघ का जन्म २८ बैसाख, १७२४ बिक्रमी को हुआ। माता-पिता ने आप जी का नाम 'संगता' रखा।

ज्ञानी गुरबखश सिंघ अपनी पुस्तक 'कलगी भाई संगत सिंघ नूं ही' में लिखते हैं कि ''बाबा संगत सिंघ के पूर्वजपुराने ज़माने के जलंधर सूबे के गाँव खेड़ी (फगवाड़ा के निकट) के रहने वाले थे, जिनके पूर्वज पहले बंगा रहते थे, जिस कारण खेड़ी निवासी आपको 'बंगेसर' उपनाम से पुकारते थे।''

इतिहास को पढ़ने के पश्चात् पता चलता है कि, ''खेड़ी सपरोड़ की एक हृदयवेधक कहानी को बड़े साहस के साथ सुना जा सकता है। निकटवर्ती गाँवों से भी इस बात की गवाही मिलती है कि खालसा पंथ की साजना के समय श्री अनंदपुर साहिब में इसी गाँव के भाई रणिया जी, भाई जोधा जी, जो भाई भानूं जी के सुपुत्र थे, के परिवारों ने गुरु साहिब से अमृत की दाति प्राप्त कर खालसा पंथ के साथ अपना पक्का सम्बन्ध जोड़ लिया था, जिसके विरोध में आकर औरंगजेब हुकूमत ने एक ख़ास फ़तवा जारी किया कि इनकी जायदाद ज़ब्त कर इनको बाग़ी करार दे दिया जाये। हुकूमत के सुपुर्द न करने की सूरत में गाँव खेड़ी तहस-नहस करने का हुक्म दिया था। इस प्रकार खेड़ी गाँव, जो ज़ालिम हुकूमत ने बेरहमी का शिकार बना कर उजाड़ दिया था, वो आज भी टीले की शक्ल में देखा जा सकता है।''

बाबा संगत सिंघ के ख़ानदान के जो परिवार, जो गाँव खेड़ी से उजड़ कर आए थे, उनमें आज भी गाँव रुड़का खुर्द, खोथड़ां, जंडाली, चक्क गुरू आदि गाँवों में बाबा जी के ख़ानदान से सम्बन्धित बहुत-से गुरसिक्ख परिवार गुरु-पंथ की सेवा में हैं। जहाँ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की संगत में जंडू सिंघा (जलंधर शहर) इलाके के भाई बुद्धा जी और भाई सुद्धा जी रामदासिए सिक्खों ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की शरण में रह कर गुरु साहिब द्वारा लड़ी गई चारों जंगों में अपनी बहादुरी के जौहर दिखाते हुए शत्रु को करारे हाथ दिखाए, वहीं दसम पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संगत बन हृदय में इतिहास समोये बैठे रामदासिए सिक्खों व सिक्ख महिलाओं द्वारा की गई कुर्बानी को भी इतिहास अपने अंदर

समोये बैठा है।

भाई रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं कि ''बड़े घल्लूघारे के समय अन्य बिरादरियों के साथ-साथ हज़ारों रामदासिए सिंघों ने भी शहादत प्राप्त की।'' इसी प्रकार प्रिं. सतिबीर सिंघ लिखते हैं कि ''सिक्ख राज स्थापित करने में रामदासिए सिंघों का विशेष योगदान है।''

इतिहास का अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट हो जाती है कि रामदासिए सिक्खों का इतिहास कुर्बानियों भरा है। इन्हीं में से थे-- कौम के अनमोल रत्न-- भाई संगत सिंघ, जिन्होंने अपना जीवन आरंभ से लेकर अंत तक दसम पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चरणों में रह कर गुज़ारा। छोटी आयु में पटना शहर में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ बाल-लीला करते हुए उनकी शरण में रह कर आपने शस्त्र-विद्या, निशानेबाज़ी, नेज़ेबाज़ी और अश्व-दौड़ में विशेष महारत हासिल की। फिर आप गुरु साहिब के साथ श्री अनंदपुर साहिब आ गए।

श्री अनंदपुर साहिब में गुरु साहिब ने जात-पांत और ऊंच-नीच के भेदभाव को ख़त्म करते हुए, हज़ारों संगत सहित १ बैसाख, १७५६ बिक्रमी को गुरु साहिब से भाई संगत सिंघ ने भी अमृत की दाति प्राप्त की। इस समय अमृत की दाति प्राप्त करने वालों में आपके चाचा भाई जोधा जी और पिता भाई रणिया जी, आपके साथी भाई मदन सिंघ, भाई काठा, भाई राम सिंघ और महिलाओं में बीबी दीप कौर शामिल थे। बीबी दीप कौर वो बहादुर सिंघणी थी जिसने मुगलों का डट कर मुकाबला किया और गुरु साहिब की बहादुर व प्यारी पुत्री होने का आशीर्वाद प्राप्त किया।

चमकौर की जंग से पहले बाबा संगत सिंघ ने बस्सी कलाँ से साहिबज़ादा अजीत सिंघ के साथ मिलकर एक ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ाने, भंगाणी का युद्ध, अगंमपुरा की लड़ाई, सरसा की जंग में भी शूरवीरता का प्रदर्शन किया था। फिर गुरु साहिब के आदेशानुसार मालवा क्षेत्र में सिक्खी का प्रचार किया था, जिस कारण गुरु साहिब को बाबा संगत सिंघ की वफ़ादारी व शूरवीरता पर पूर्ण विश्वास था। फलस्वरूप भाई संगत सिंघ तैयार-बर-तैयार पूर्ण खालसा थे, जिस कारण गुरु साहिब की चयन रूपी बख़शीश भाई संगत सिंघ की झोली में पड़ी। ९ पौष १७६१ बिक्रमी की सुबह जब मुग़ल फौज ने चमकौर की गढ़ी को घेरा डाला तो भाई संगत सिंघ द्वारा पहनी हुई गुरु साहिब वाली पोशाक और कलगी ने बार-बार मुगलों में गुरु साहिब के होने का भ्रम पैदा किया। भाई संगत सिंघ को मुग़ल फौज श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी समझ कर उन पर तीरों की वर्षा करती रही। भाई संगत सिंघ ने डट कर मुगलों का मुकाबला किया और कृपाण, तीरों व नेजे का प्रयोग कर मुगलों की लाशें बिछा दीं। घायलावस्था में भी भाई संगत सिंघ अंतिम समय तक 'गुरु-फतिह' के जैकारे लगाते रहे और गुरु साहिब द्वारा दिए हुक्म पर इन्न- बिन्न पूरे उतरे। ज़ालिमों के विरुद्ध युद्ध लड़ते हुए, गुरु साहिब जी के फलसफे पर चलते हुए दुश्मनों के साथ चमकौर की (अद्वितीय) जंग में ९ पौष, १७६१ बिक्रमी को शहादत प्राप्त कर गए।

# शहीद भाई बचित्तर सिंघ

– डॉ. हरप्रीत कौर*

भाई बचित्तर सिंघ सिक्ख इतिहास के अठारहवीं सदी के महान शहीदों में से एक हैं। वे उस संतोषी ख़ानदान के साथ सम्बन्ध रखते थे, जिन्होंने अपना समूचा जीवन गुरु-घर के लेखे लगा दिया। इस परिवार के अनेक सदस्यों ने शहादत का जाम पिया, मगर कभी भी सिक्खी आस्था से विचलित नहीं हुए। उन्हें उस महान शहीद के घर जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिन्होंने सिक्खी की ख़ातिर अपना बंद-बंद कटवा लिया, परन्तु ज़ालिम की अधीनता स्वीकार नहीं की। भाई बचित्तर सिंघ वे जाँनिसार योद्धा हैं, जिन्होंने श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ते समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ ''औखी घाटी बिखड़ा पैंडा, पर असां ने तुरना'' का प्रण किया था। भाई बचित्तर सिंघ का जन्म १२ अप्रैल, १६६३ ई. को अलीपुर, ज़िला मुज़फ्फरगढ़ में भाई मनी सिंघ जी के घर[१] माता सीता बाई की कोख से हुआ।[२]. भाई बचित्तर सिंघ, भाई मनी सिंघ जी के पाँच सुपुत्रों में से एक थे, जिन्हें भाई साहिब ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुपुर्द किया था। उन्होंने संवत् १७५६ बि. की बैसाखी वाले दिन अपने पाँच भाइयों सहित अमृत-पान किया :

*फेरे माई दास सुत राजपूत अत्त मज़बूत।*
*निकट है मुलतान के इक अली गढ़ असथान।*
*तांहि के सुत पाँच पाँचे भए सिंघ सुजान।*
*उदे सिंघ बचित्र सिंघ अनक सिंघ सु बीर।*
*अजब सिंघ सुमत अजाइब सिंघ रणधीर।*[३]

भाई बचित्तर सिंघ को अपने जीवन का लम्बा समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संगत में व्यतीत करने का अवसर मिला। वे तेग-चलाने में इतने निपुण थे कि कई सैनिकों का अकेले ही मुकाबला कर सकते थे। उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कई जंगों में भाग लिया था। संवत् १७५७ में जब पहाड़ी राजाओं ने श्री अनंदपुर साहिब में लोहगढ़ किले पर हमले की तैयारी की तो उस समय लोहगढ़ किले के प्रमुख भाई दुनी चंद थे।[४] वे भाई साल्हो जी के पोते थे :

*दुनी चंद सालो कर पोता।*
*धारी वाल जाट सिख होता।*
*गिलन कर मसंद जग जाना।*
*सभ ही मानत ता कर आना।*[५]

पहाड़ी राजाओं ने किले पर हमला करने की यह योजना बनाई थी कि फ़ौज के आगे जसवालिए राजा का मस्त हाथी लगा कर किले का दरवाज़ा तोड़ा जाये। सिक्खों ने आकर गुरु जी को बताया कि पहाड़ी राजा

*रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ९६४६७-८५९१८

कल सुबह हाथी की मदद से किले पर हमला करेंगे। पहाड़ी राजाओं के अनुसार हाथी के सामने कोई नहीं आएगा। गुरु जी कहने लगे कि मेरे पास भी एक 'हाथी' है जिसका नाम दुनी चंद है। उस मस्त हाथी का मुकाबला करने के लिए गुरु जी ने भाई दुनी चंद की ड्यूटी लगाई थी। जब दुनी चंद डरने लगा तो सिक्खों ने आकर उसे ढारस बंधाया :

*जसवारन संगि मता करियो*
*गुर द्वार पै मत्त दुरकाही।*
*गज सनमुख तो नहि आवहिगो*
*तिन बेमुख उलट मर लखे पाही।*
*यौं सुन कै मुसकाय कहै गुर,*
*''मो ढिग है गज मत्त मत्ताही।*
*केहरि जयो यामहि जब जावहि,*
*नाम दुनी चंद मत्त गजाही।...*
*आपनी आपनी ठोर टिकै*
*सब होत निसीत डर यो मन माही।*
*दुनी चंद बुझै सभ लोकन*
*ते तब धीरज दीन सभै सिख वाही।*[६]

दुनी चंद ने कायरता दिखाई और रात को किले की दीवार फांद कर भागने की कोशिश में अपनी टांग तुड़वा ली। इसके बाद वह साँप के डंसने से मर गया :

*चला भाज कै बिलम न कई।*
*गिरि ते खिसक टांग टुट गई।*
*साथिन ताको लयो उचाई।*
*पहुचे देस अपने जाई।*
*भीतर धाम दुरयो जब जाई।*
*डसयो नाग अदभुत तिह थाई।*
*पल मै गिरयो न धीर धराना।*
*माझा रोर पाँच सै जाना।*[७]

जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को पता चला कि दुनी चंद ने हाथी के साथ लड़ने से मना कर दिया है, तो गुरु जी ने अपने अंग-संग रहने वाले पराक्रमी सिंघों की तरफ नज़र घुमाई तो गुरु जी की नज़र भाई बचित्तर सिंघ पर पड़ी। 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के अनुसार :

*तिनहुं मझार एक है बचित्र सिंघ सूरमा।*
*बली बिंद बाहु दंड शत्र ते गरूरमा।*
*सु राजपूत जाति ते मुछैल छैल जानि ये।*
*क्रिपान ढाल अंग संग जंग मैं महांनिये।*[८]

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई बचित्तर सिंघ को एक नागनी बरछा देकर हाथी का मुकाबला करने के लिए प्रोत्साहन दिया :

*नेज़ा गहे खरे जो सनमुख*
*स्त्री प्रभु निकट हकारा।*
*आउ बचित्र सिंघ बड जोधा*
*तुव सिर भार उदारा।*[९]

इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने परम सिक्ख भाई बचित्तर सिंघ की मस्त हाथी के साथ मुकाबला करने की ड्यूटी लगाई। मस्सू नामक इस हाथी को शराब पीने और मस्त होकर अपनी सूंड के साथ उत्पात मचाने की आदत थी। यह कोई आम हाथी नहीं था और इसे दुर्ग के दरवाज़े तोड़ने का प्रशिक्षण दिया गया था।[१०] भाई बचित्तर सिंघ ने गुरु जी की कृपा से नागनी बरछे के साथ शराबी हाथी

का मुकाबला किया। उन्होंने मैदान-ए-जंग में हाथी के नागनी बरछा इतने ज़ोर के साथ मारा कि हाथी चीख उठा और भाई बचित्तर सिंघ के आगे शीश झुकाता हुआ वह पहाड़ी फौज को ही रौंदता हुआ भाग खड़ा हुआ। 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के अनुसार :

*निकसयो तोमर मसतक ते*
*जबि हटि पाछै मुख मोरा।*
*पुन बचित्त सिंघ चोभति नेज़ा*
*रिसयो दुरद तबि घोरा।*
*बहिति रुधर की धार बडेरी*
*झटति सुंड फिर फेरी।*
*जो तोमर को चोकति नैरै*
*तिन कौ मारति गेरी।।*[११]

भाई बचित्तर सिंघ ने पहाड़ी राजाओं की फौज को वापस जाने के लिए विवश कर दिया। जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दिसंबर १७०४ ई. में श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ा तो भाई बचित्तर सिंघ उस समय मुश्किल की घड़ी में गुरु जी का साथ देने वाले सिक्खों में से एक थे। गुरु जी का काफ़िला जब सरसा नदी की तरफ रवाना हुआ तो दुश्मन की फौज ने हमला कर दिया। कवि वीर सिंघ (बल्ल) के अनुसार पहाड़ी राजाओं का भाई उदै सिंघ के साथ युद्ध हुआ। गुरु जी ने १०० सिंघों का जत्था भाई बचित्तर सिंघ को देकर रोपड़ की तरफ भेजा :

*आइ लरे ते नीच पहारीये*
*बीर उदै सिंघ जंगु मचाइयो।*
*सौ असवार दै सिंघ बचित्र को*
*रोपर ते तिह उर पठाइयो।*[१२]

भाई बचित्तर सिंघ का जत्था जब मलकपुर रंघड़ां पहुँचा तो उनका मुकाबला सरहिन्द की फ़ौज के साथ हुआ। इस लड़ाई में शौर्य के साथ लड़ते हुए आप गंभीर रूप से ज़ख़्मी हो गए। 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार :

''भाई बचित्तर सिंघ सरसा नदी से रोपड़ की तरफ़ आया। इसकी मुठभेड़ मलकपुर के रंघड़ों के मैदान में सरहिन्दी फ़ौज गैल हुई। इसके साथी एक-एक करते शहादतां पाइ गए। इह सख़्त घायल होइ ज़िमीन ते गिर पड़ा। पीछे से साहिबज़ादा अजीत सिंघ, मदन सिंघ आदि सिक्खां के गैल आइ पहुँचा। इस बचितर सिंघ को उठाइ कोटला निहंग में लै आंदा, इसे गुरू जी को आए मसतक टेका।''[१३]

इस प्रकार घायल भाई बचित्तर सिंघ को साहिबज़ादा अजीत सिंघ तथा अन्य सिंघों ने कोटला निहंग खान में पहुँचाया। यह गाँव पंजाब के रोपड़ ज़िले से तकरीबन दो-तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गुरु साहिब पहले भी इस गाँव में अपने चरण रख चुके थे। जब ज़ख्मी भाई बचित्तर सिंघ को कोटला निहंग खान में पहुँचाया गया तो गुरु जी वहीं मौजूद थे। गुरु जी ने भाई बचित्तर सिंघ के इलाज की ज़िम्मेदारी भाई निहंग खान को सौंपी थी। भाई निहंग खान ने भाई बचित्तर सिंघ की बहुत सेवा की। उन्हें कोठरी में एक खाट पर लेटाया गया। जब गुरु जी वहाँ से चले

गए तो किसी मुखबिर ने भाई बचित्तर सिंघ से सम्बन्धित रिपोर्ट दी। इसके बाद हवेली की तलाशी ली गई। सारी हवेली की तलाशी के बाद उस कोठरी की तलाशी लेने का समय आया, जिसमें भाई निहंग खान की पुत्री बीबी मुमताज़ भाई बचित्तर सिंघ की देखभाल कर रही थी। कोठरी की तलाशी लेने के सम्बन्ध में भाई निहंग खान ने कहा कि इस कोठरी में मेरी पुत्री मुमताज़ और मेरा जमाई हैं। इस कारण कोठरी की तलाशी न हुई। बीबी मुमताज़ ने भाई बचित्तर सिंघ की बहुत सेवा की, मगर उनके घाव बहुत गहरे थे और वे शहीद हो गए। 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार, ''भाई बचित्तर सिंघ मौत की घड़ियाँ गिन रहा था। अगले दिवस नौ पोह शनिवार कर दिहुं डेढ़ पहर रैण गई इस दुनिया से चल वसिआ।'' भाई निहंग खान की पुत्री मुमताज़ की मंगणी बस्सी पठाणां में हुई थी। उसने अपने पिता द्वारा भाई बचित्तर सिंघ के उसके पति होने से सम्बन्धित कहे गए वचन को कबूल करते हुए शादी करने से इन्कार कर दिया और अपनी सारी आयु भाई बचित्तर सिंघ की विधवा के तौर पर व्यतीत की।[१४] सिक्ख इतिहास के पन्नों में भाई बचित्तर सिंघ की शहादत के साथ ही बीबी मुमताज़ की आस्था व कुर्बानी की दास्तान को भी याद किया जाता है।

**संदर्भिका :**


१. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ विश्वकोष, भाग चौथा, गुररतन पब्लिशर्स, पटियाला, २००५, पृष्ठ १४०४.

२. गुरमुख सिंघ (संपा.), ज्ञानी गरजा सिंघ दी ऐतिहासिक खोज, सिंघ ब्रदर्स, श्री अमृतसर साहिब, २०१०, पृष्ठ २८२.

३. सुमेर सिंघ, श्री गुर पद प्रेम प्रकाश, बूटा सिंघ, १६, अशोका रोड, नई दिल्ली, १९८८, पृष्ठ १६३.

४. रघबीर सिंघ अनंदपुरी, दशमेश पिता दे सिदकी सिक्ख ते धर्म युद्ध, प्रेम नगर, अबलोवाल रोड, पटियाला, २०००, पृष्ठ १५८

५. सुमेर सिंघ, श्री गुर पद प्रेम प्रकाश, पृष्ठ २४४.

६. कुइर सिंघ, गुरबिलास पातशाही १०, (संपा.) शमशेर सिंघ अशोक, पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९९९, पृष्ठ १४२-१४३.

७. उपरोक्त, पृष्ठ १४४.

८. कवि संतोख सिंघ, श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, जिल्द बारहवीं, भाषा विभाग, पंजाब, २०११, पृष्ठ ५३०६.

९. उपरोक्त।

१०. रघबीर सिंघ अनंदपुरी, दशमेश पिता दे सिदकी सिक्ख ते धर्म युद्ध, पृष्ठ १५८

११. कवि संतोख सिंघ, श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, जिल्द बारहवीं, पृष्ठ ५३१३.

१२. कवि वीर सिंघ (बल्ल), सिंघ सागर, (संपा.) डॉ. कृष्णा कुमारी बांसल, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, १९८६, पृष्ठ १४१.

१३. स्वरूप सिंघ कौशिश, गुरू कीआं साखियां (संपा.) प्यारा सिंघ पद्म, सिंघ ब्रदर्स श्री अमृतसर साहिब २००३, पृष्ठ १५४.

१४. उपरोक्त, पृष्ठ -१५८.

# बाबा गुरबखश सिंघ शहीद

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

जगत्-गुरु श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित सिक्ख धर्म त्याग, तपस्या, सेवा, जाप (नाम-सिमरन), लोक-कल्याण, सद्भावना और अद्वितीय कुर्बानियों के कारण अपनी अलग व विलक्षण पहचान रखता है, विश्व में ऊंचा व विशिष्ट स्थान रखता है। समय-समय पर सिक्ख गुरुओं, महापुरुषों, स्त्रियों, बच्चों, साहिबजादों तथा अन्य अनेक नौजवानों ने मानवता, धर्म, न्याय, सच, समानता और गुरु-घरों की आन, बान एवं शान कायम रखने हेतु कुर्बानियां दी हैं। सिक्ख धर्म के कुर्बानियों भरे इतिहास के पन्नों पर बाबा गुरबख्श सिंघ शहीद का भी नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

सिक्ख इतिहास में सन् १७६४ ई. का वर्ष भी बहुत-सी कुर्बानियों व शहादतों का वर्ष बन गया था। इस वर्ष अहमद शाह अब्दाली और उसके द्वारा नियुक्त किए हाकिमों ने सिक्खों का नामो-निशान मिटाने हेतु अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। जहां कहीं भी किसी सिक्ख के मौजूद होने का पता चलता, वहीं पर सेना द्वारा हल्ला बोल दिया जाता। स्त्रियों, बच्चों तथा बुजुर्गों को पकड़-पकड़ कर घोर यातनाएं दी जातीं और उन्हें शहीद किया जाता। सबसे ज्यादा निंदनीय व बुरी बात यह की गई कि सिक्खों के जान से अधिक प्रिय उनके गुरुद्वारा साहिबान ढहा (गिरा) दिए गए। श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब की इमारत को नुकसान पहुंचाया गया और पवित्र सरोवर को पाट दिया गया। सिक्ख यह कभी सहन नहीं कर सकते थे। छोटे-छोटे जत्थे होने के बावजूद वे अपनी जान हथेली पर रखकर श्री अमृतसर साहिब पहुंचे और जहान खान व अन्य अत्याचारियों के साथ टक्कर ली। उन्हें भगाया गया तथा मारा गया। शहादत देकर शहीदों में अपना नाम शामिल किया गया।

बाबा दीप सिंघ जी उस समय शहीद हुए शूरवीरों में से सबसे महान शख्सियत व बुजुर्ग जरनैल थे। अन्य अनेक सिक्ख भी अफगानों की धक्केशाही व बर्बरता के विरुद्ध लड़ते हुए कुर्बान हो गए। बाबा दीप सिंघ जी के जत्थे के अलावा एक जत्था श्री अनंदपुर साहिब से भी आया था, जिसके अगुआ बाबा गुरबखश सिंघ थे। उन्होंने अति शूरवीरता के साथ अत्याचारियों का मुकाबला किया और उन्हें जता दिया कि सिक्ख अभी जिंदा हैं। उनके होते हुए श्री दरबार साहिब का अपमान करने वाला चैन की नींद नहीं सो सकता था। अफगानों का यह भ्रम उनके दिल में से निकाल दिया कि सिक्ख खत्म हो गए हैं या खत्म किए जा सकते हैं। अफगानों को ऐसी टक्कर दी कि वे हैरान-परेशान हो उठे, सिक्खों का लोहा मानने को मजबूर हो उठे।

*बी-एक्स -९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; मो. ९८७२२-५४९९०*

बाबा गुरबखश सिंघ का जन्म खेमकरण के निकट गांव लील में हुआ था। किशोरावस्था में ही उनका सिक्ख धर्म में विश्वास पक्का हो गया था। जवानी में पहुंच कर भाई मनी सिंघ जी के हाथों पांच प्यारों के माध्यम से अमृत-पान किया और अपने जीवन को पूर्ण गुरसिक्खी में ढाल लिया। यह क्षेत्र माझा के केंद्र में था और इस क्षेत्र में हाकिमों की सेना नित्यप्रति सिक्खों की तलाश में जुटी रहती थी। स. गुरबखश सिंघ की विद्वता, गुणों एवं मीठे स्वभाव की दूर-दूर तक चर्चा थी। दूसरी तरफ सरकार को खुश करने के चाहवान, चुगलखोर, मुखबिर और इनाम के भूखे व्यक्तियों की कमी नहीं थी। प्रतिकूल परिस्थितियों के चलते बाबा गुरबख्श सिंघ ने चक्रवर्ती जीवन अपना लिया। कुछ समय के लिए जंगलों में कई जत्थों के साथ रहे। हर जगह उन्होंने अपने गुणों की बदौलत मान-सम्मान प्राप्त किया। सिक्ख मिसलों में उनका विशेष सम्मान होने लगा।

श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब सिक्खों का केंद्रीय स्थान होने के कारण सिक्ख विरोधी दलों की नज़र में हमेशा सिक्ख-शक्ति के स्रोत के रूप में जाना जाता था, जिस कारण वे इसे हमेशा से नेस्तनाबूद करने की कोशिश करते आ रहे थे। बाबा गुरबखश सिंघ अपने साथियों सहित (कुल संख्या तीस) इस पावन स्थान पर डेरा जमाए बैठे थे। अब्दाली को जब यह खबर मिली कि सिक्ख तो अभी भी जिंदा हैं और श्री दरबार साहिब में डेरा जमाए बैठे हैं, तो उसने १ दिसंबर, १७६४ ई. को श्री दरबार साहिब पर आक्रमण कर दिया। अफगान सेना की संख्या हजारों में थी। सामने बाबा गुरबख्श सिंघ के नेतृत्व में कुल तीस सिंघ थे। जबरदस्त टक्कर हुई।

अफगान सेना के पास तोपें, बंदूकें, असंख्य घोड़े व हाथी थे। दूसरी ओर सिंघों के पास खतरनाक हथियार तो नहीं थे, लेकिन उनमें जोश की कोई कमी नहीं थी, साहस की कोई कमी नहीं थी। सिंघ शूरवीर योद्धा केवल आस्था के अधीन अपने गुरुधामों (गुरु-घरों) की पवित्रता की रक्षा हेतु जान हथेली पर रख कर आए थे। घमासान युद्ध हुआ। सिंघों ने ''बोले सो निहाल, सति श्री अकाल'' के जयकारे लगाते हुए अफगानों पर ऐसे वार किए कि उन्हें पता चल गया कि उनका जांबाज व निडर सिंघों के साथ सामना हो रहा है, धर्मी व कौम-प्रेमियों से मुकाबला हो रहा है। बाबा गुरबखश सिंघ ने अति उत्साह, जोश और बहादुरी से सिंघों का नेतृत्व किया और साथी सिंघों सहित मिलकर बड़ी संख्या में दुश्मनों को मौत के घाट उतारने के बाद शहादत प्राप्त की।

सिक्ख इतिहास में बाबा गुरबखश सिंघ का नाम लासानी कुर्बानी के लिए सदैव आदरपूर्वक याद किया जाता रहेगा। सिक्खों को आज भी उन जैसे महान योद्धाओं की जरूरत है। हम हमेशा उनके ऋणी रहेंगे। उनसे प्रेरणा लेते हुए हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अपने सभी गुरुधामों की मर्यादा व पवित्रता की रक्षा हेतु जी-जान से जुटे रहना चाहिए। जो लोग इनकी पवित्रता व मर्यादा को भंग करने की कोशिश करते हैं, उन्हें मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए और सद्भावना, भाईचारा, सेवा, प्रेम, शांति का संदेश पूरे विश्व में दूर-दूर तक फैलाना चाहिए।

# हिंदुस्तान की आज़ादी के इतिहास में भूली-बिसरी जंग : मुद्दकी की लड़ाई

– स. हरभजन सिंघ*

देशवासी १८५७ ई. के विद्रोह को भारत की आज़ादी की ख़ातिर लड़ी गई पहली जंग समझते हैं और भारत सरकार भी यही दिखा रही है। यह जंग अंग्रेज़ों की ग़ुलामी से देश को आज़ाद करवाने के लिए उनकी फ़ौज के हिंदुस्तानी सिपाहियों द्वारा आरंभ किया गया विद्रोह था, जिसमें कई रजवाड़े भी शामिल थे। यह मात्र उत्तरी और मध्य भारत तक ही सीमित रहा था। मौजूदा समय में देशवासियों की धारणा बनी हुई है कि यदि पंजाब ने विद्रोहियों का साथ दिया होता तो यह विद्रोह असफल न होता और देश को आज़ादी मिल जाती। देशवासियों की मानसिकता इस बात पर इसलिए टिकी हुई है, क्योंकि इतिहासकार अंग्रेज़ों द्वारा पंजाब को बदनाम करने के लिए फैलाए गए भ्रम पर विश्वास किए जा रहे हैं। इस विद्रोह के समय पंजाब के चीफ़ कमिशनर जॉन लारेंस की तरफ से जो १०० रेजिमेंट्स विद्रोह को दबाने के लिए पंजाब से दिल्ली भेजी गई थीं, उन्हें जानबूझ कर सिक्ख रेजिमेंट का नाम दिया गया था, जबकि वास्तव में उनमें एक भी सिक्ख नहीं था। इनमें मुसलमान, गोरखा और हिंदुस्तानी सिपाही थे। सतलुज पार की रियासतों के सिक्ख सिपाही अवश्य अंग्रेज़ों का साथ दे रहे थे, जो यह इलाका उस समय पंजाब का हिस्सा नहीं था। साथ ही बड़ी संख्या में उन लोगों को, जो बतौर मज़दूर काम करते आ रहे थे, पदोन्नत करते हुए पायनियर और सैपर भर्ती किया गया था।

इस ऐतिहासिक तथ्य को मानते हुए जॉन लारेंस ने अपनी सरकार को अपने पत्र दिनांक १७ सितम्बर, १८५७ ई. के माध्यम से लिखा था कि हमारी हर कोशिश के बावजूद सिक्ख विद्रोहियों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए फ़ौज में भर्ती नहीं हो रहे थे, जिसका हमें खेद है–– It is much to be regretted that Sikhs could not be prevailed upon to secede from the cause of fighting for British India (Joginder Singh, '1857 Myth and Reality', p. 239) यदि इतिहासकारों और ख़ास कर भारत सरकार ने इतिहास के झरोखों में जाकर गुप्त दस्तावेज़ों तथा उस समय के संभाले हुए रिकार्ड का अध्ययन किया होता तो पंजाब पर यह दाग़ न लगता और साथ ही पंजाबियों की आन-शान में विस्तार होता। पंजाबी तो इस विद्रोह से लगभग एक दशक पूर्व सन् १८४५ से हिंदुस्तानी लोगों को अंग्रेज़ों की ग़ुलामी से निजात दिलाने के लिए उनके साथ दो जंग लड़

*जी-४३०, बी. आर. एस. नगर, लुधियाना। फोन : ९८७२८-१०८२०

चुके थे, जिसका आग़ाज़ मुद्दकी की लड़ाई (१८ दिसंबर, १८४५ ई.) से शुरू हो गया था। यह लड़ाई इतनी घातक थी कि इसमें अंग्रेज़ों के तीन उच्चाधिकारी (दो मेजर जनरल और एक ब्रिगेडियर) मारे गए थे।

अगर इन जंगों की ऐतिहासिक पृष्टभूमि की तरफ जाएं तो यह दोष हिंदुस्तानियों पर लगता है कि उन्होंने इन जंगों के समय पंजाबियों का साथ नहीं दिया था, क्योंकि वे अंग्रेज़ों के भ्रम-जाल में फंस गए थे। अंग्रेज़ तो अपने सिपाहियों को तनख़्वाह के अलावा बाहर के मुल्क (Foreign Country War Allowance) के साथ लड़ाई वाला भत्ता भी दे रहे थे। इन पूरबिए हिंदुस्तानी सिपाहियों ने लाहौर सरकार की तरफ से की गई अपील को दरकिनार करते हुए अपने ही मुल्क के एक आज़ाद और स्वतंत्र राज्य पंजाब के साथ लड़ना स्वीकार कर लिया था। ये सिपाही अंग्रेज़ों की फ़ौजी ताकत का मुख्य (७५%) हिस्सा थे। साथ ही हिंदुस्तान के बहुत-से पूरबिए अंग्रेज़ों से कहीं अधिक तनख्वाह लेते हुए पंजाब की फ़ौज में नौकरी कर रहे थे और उनका ही एक भाई इस आज़ाद प्रांत पंजाब की फ़ौज का कमांडर-इन-चीफ़ (तेज सिंघ) था। इन पूरबियों को याद था कि कैसे मुद्दकी की लड़ाई से पहले लाहौर दरबार की तरफ से गुप्त तौर पर भेजे गए धार्मिक नुमायंदे (हिंदू और मुसलमान) अंग्रेज़ों की लुधियाना, फ़िरोज़पुर, करनाल, मेरठ आदि छावनियों में पहुँच कर भारतवासियों को हिंदुस्तान की आज़ादी की ख़ातिर इन एंग्लो-सिक्ख जंगों के समय अंग्रेज़ों का साथ न देने की अपील करते रहे थे। लाहौर दरबार के पूरबिए आफिसरों ने तो पंजाब की फ़ौज को (जिसमें ज़्यादा सिक्ख होने के कारण, सिक्ख फ़ौज कहा जाता था) भरोसा दिलाया हुआ था कि अंग्रेज़ों के ये हिंदुस्तानी पूरबिए सिपाही लड़ाई के समय अंग्रेज़ों का साथ नहीं देंगे। (जॉर्ज ब्रूस, सिक्स बैटल फॉर इंडिया दी एंग्लो-सिक्ख वार्ज़, पृष्ठ ९०)

अगर इतिहास की तरफ और दृष्टिपात करें तो अंग्रेज़ अपने ही एक भरोसेमन्द दोस्त 'पंजाब' के साथ गद्दारी करने पर तुले हुए थे, जिन्होंने अफगानिस्तान में हो रहे उनके कत्ल-ए-आम के समय (सन् १८४२ में महाराजा शेर सिंघ के समय) उन्हें बचाया था। प्रथम युद्ध से पूर्व (१८४५-४६ ई.) अंग्रेज़ों द्वारा पंजाब पर हमले की तैयारियों को प्रदर्शित करती खबरें हिंदुस्तान की अखबारों में प्रकाशित हो रही थीं और लाहौर भी पहुँच रही थीं। एक आज़ाद मुल्क कैसे चुप रह सकता था और अंग्रेज़ों की ज्यादतियों पर हैरान भी हो रहा था। इसी को मुख्य रखते हुए खालसा पंचायत, जो फ़ौज की नुमायंदगी कर रही थी, द्वारा दोस्ती पर यकीन रखते हुए यह प्रस्ताव लुधियाना में अंग्रेज़ों की तरफ भेजा था-- ''हम जंग नहीं चाहते, दोस्ती रखना चाहते हैं। यदि अंग्रेज़ों की फ़ौज पूरब की तरफ से अपनी लुधियाना और फ़िरोज़पुर स्थित छावनियों की तरफ बढ़ेगी, तो ही खालसा फ़ौज सतलुज की तरफ बढ़ेगी, नहीं तो नहीं।'' (संदर्भ : कॅरियर ऑफ मेजर जॉर्ज ब्राडफुट, पृष्ठ ७०)

अंग्रेज़, जिन्होंने कई वर्ष से लंदन स्थित डीउक ऑफ वालिंगटन के साथ तालमेल स्थापित करते हुए पंजाब पर हमला करने की योजना बनाई हुई थी, कैसे रुकने वाले थे। उन्हों तो लाहौर दरबार के अहम दरबारियों का समर्थन भी हासिल था, जो (ग़ैर-पंजाबी होते हुए) अपनी ही सरकार के साथ गद्दारी करते हुए, अंग्रेज़ों के समर्थक बने बैठे थे और इसी गद्दारी के प्रभावाधीन फ़ौज को दिल्ली मारने और लूटने के लिए उत्साहित कर रहे थे। सिक्ख फ़ौज दोस्ती पर विश्वास रखती हुई इन दरबारियों (भाई राम सिंघ, तेज सिंघ, लाल सिंघ, दीना नाथ और इनका नेता डोगरा गुलाब सिंघ) की दलीलों को नज़रअन्दाज करते आ रही थी। इसकी पुष्टि करता हुआ अंग्रेज़ों का सफ़ीर कनिंघम, जो मौके का गवाह था, अपनी किताब में लिखता है कि यदि अंग्रेज़ों ने हमले की तैयारियाँ न की होतीं, तो खालसा पंचायत कभी भी सतलुज की तरफ सिक्ख फ़ौज के बढ़ने का समर्थन न करती, जिसके लिए लाल सिंघ और तेज सिंघ जैसे (अंग्रेज़ों के ख़रीदे हुए) ग़ैर-पंजाबी गद्दार नेता अपनी लगातार कोशिशों के माध्यम से सिक्ख फौज को जंग की तरफ धकेलने के लिए उत्साहित करते आ रहे थे (हिस्ट्री ऑफ दी सिक्खस, पृष्ठ २९३)

उधर गवर्नर जनरल ने अपनी फौज को कमांडर-इन-चीफ़ हीउ गफ के नेतृत्व में ११ दिसंबर, १८४५ ई. को अम्बाला, मेरठ तथा अन्य छावनियों से सतलुज की तरफ बढ़ने का हुक्म जारी कर दिया, फिर यह जानते हुए भी कि १२ दिसंबर तक सिक्ख फौज द्वारा दरिया सतलुज पार करने या सतलुज की तरफ बढ़ने की कोई हलचल पैदा नहीं हुई। १३ दिसंबर को झूठ की बुनियाद पर एकतरफा जंग का एलान कर दिया और साथ ही सिक्खों के सतलुज पार पूरब दिशा में २५ परगनों को ज़ब्त करने का नोटिफिकेशन जारी कर दिया। (गंडा सिंघ, प्राईवेट कोर्सपाउडेंस रिलेटिंग टू एंग्लो-सिक्ख वार्ज़, इन्ट्रोडक्शन, पृष्ठ ८३) ये खबरें सिक्खों को भी मिल रही थीं कि अंग्रेज़ फ़ौज हमले के लिए कूच कर चुकी है। सिक्ख फ़ौज, दीवान अयोध्या प्रसाद के मुताबिक इस समय सतलुज दरिया की पश्चिमी दिशा में अपने इलाके गाँव नथियांवाला में पड़ाव किए बैठी थी, इसलिए सिक्ख फ़ौज को अब सतलुज दरिया पार कर अपने ही पार के इलाकों की हिफ़ाज़ात के लिए अंग्रेज़ों का हमला रोकने के लिए मोर्चाबन्दी करना ज़रूरी हो गया था। दीवान की लिखित के मुताबिक रेगुलर सिक्ख फ़ौज के पहले ४ ब्रिगेड अपने तोपखाने सहित नगरघाट के माध्यम से १४-१५ दिसंबर को दरिया पार कर फ़िरोज़पुर के निकट अपने पार के इलाके में स्थित गाँव अटारी पहुँच गए। इसी प्रकार तीन अन्य ब्रिगेडों ने १५-१६ दिसंबर को दरिया पार कर लिया था, परन्तु वे अपने कमांडर तेज सिंघ के इन्तज़ार में दरिया पर स्थित गाँव गंडा सिंघ वाला के पास रुके रहे। (संदर्भ : वाक्याए-जंग-ए-सिक्खां, पृष्ठ २५- २६)

एक अन्य आठवाँ मेवा सिंघ ब्रिगेड भी

लाहौर से इस जंग में कूदने के लिए १६ दिसंबर को (सतलुज के लिए) रवाना हो गया, जिसे तेज सिंघ, साजिश तले लाहौर में ही रोके बैठा था। तेज सिंघ खुद भी आने-बहाने लाहौर में रुका रहा, मगर यह जान कर कि कहीं मेवा सिंघ का ब्रिगेड सिक्ख फ़ौज को उसके ख़िलाफ़ भड़का न दे, ख़ुद भी १७ दिसंबर को गंडा सिंघ वाला के पास पड़ाव कर रहे तीन ब्रिगेडों के पास जा पहुँचा। यहाँ फ़िरोज़पुर फ्रंट पर अब सिक्ख फौज के ८ ब्रिगेड (लगभग ३०००० रेगुलर फ़ौज) और इससे अलग इर्रेगुलर फ़ौज अंग्रेज़ों को तबाह करने के लिए तैयार खड़ी थी।

सिक्ख फ़ौज के कमांडर तेज सिंघ तथा लाल सिंघ, जो अंग्रेज़ों के साथ मिल चुके थे, अंग्रेज़ों की नहीं, अपनी ही फ़ौज की तबाही चाहते थे, इसलिए उन्होंने अंग्रेज़ों के राजनयिक अधिकारियों (कैप्टन निकोलसन और मेजर ब्राडफुट) के दिशा-निर्देश पर चलते हुए अपनी फ़ौज को एक जगह रुके रहने की बजाय फैलाने की योजना बनायी। १७ दिसंबर की रात, लाल सिंघ पहले पार हुए ४ ब्रिगेडों में से अपने साथ ३ ब्रिगेड लेकर सुबह तक फेरू शहर पहुँच गया कि आगे बढ़ कर गवर्नर जनरल के साथ आ रही फ़ौज का रास्ता रोका जाये। फ़ौज तो एक जगह रह कर अंग्रेज़ों का मुकाबला करना चाहती थी। परन्तु जैसे पंडित देवी प्रसाद ने लिखा है, हुक्म तो फ़ौज को अपने कमांडरों का मानना पड़ता था। जिधर वे हुक्म करते, उनके साथ फ़ौज चल पड़ती थी। फेरू शहर से प्रातः काल १८ दिसंबर को लाल सिंघ अपने साथ बहुत कम पैदल फ़ौज (कनिंघम के मुताबिक २५०० और जॉर्ज ब्रूस के मुताबिक २०००) तथा २२ हल्की तोपें लेकर अपनी घुड़सवार इर्रेगुलर फ़ौज (लगभग ८००० से १०, ०००) सहित अंग्रेज़ों की मुद्दकी की तरफ पहुँच रही फ़ौज की सूचना लेने का बहाना बना कर निकल पड़ा, ताकि यह सारी रेगुलर फ़ौज तबाह हो जाये और पीछे आ रही अंग्रेज़ों की सारी फ़ौज इकट्ठी हो जाये। जब इस फ़ौज को मुद्दकी (जो सिक्खों का इलाका था) में अंग्रेज़ों के डटे होने का पता चला तो उन्हें लाल सिंघ पर हमला करने के लिए ज़ोर डाला गया। इस समय रेगुलर फ़ौज के ब्रिगेड कमांडर महिताब सिंघ मजीठिया और राम सिंघ छापेवाला तथा इर्रेगुलर फ़ौज के कमांडर जनरल बुद्ध सिंघ व चतर सिंघ कालियांवाला फ़ौज की मदद के लिए आ पहुँचे और उन्होंने मोर्चा संभाल लिया, २००० पैदल फ़ौज मध्य और इर्रेगुलर घुड़सवार फ़ौज इधर-उधर। इन सरदारों के पहुँचने के कारण लाल सिंघ अब हमला करने का हुक्म नहीं दे रहा था, क्योंकि वह तो अपनी ही फ़ौज मरवाने के लिए आया था। आख़िरकार उसे हमले का हुक्म देना ही पड़ा और लड़ाई शुरू होते ही वो अपनी ५००० घुड़सवार फ़ौज सहित वहाँ से रफूचक्कर हो गया, जो पियर्सन हैसकथ के मुताबिक अंग्रेज़ों की तयशुदा योजनानुसार उसके द्वारा की गई कार्यवाही थी। (हीरो ऑफ देहली, पृष्ठ ७९)

दुनिया के इतिहास में यह एक असमतोल लड़ाई थी, २००० पैदल (२ या ३ बटालियन)

सिक्ख फ़ौज के मुकाबले अंग्रेज़ों की १२००० पैदल फ़ौज (१२ बटालियन), ३८५० यूरोपियन और ८५०० हिंदुस्तानी सिपाही। सिक्खों की २२ हल्की तोपों के मुकाबले अंग्रेज़ों की ४२ तोपें (३० हलकी और १२ भारी तोपें)। अंग्रेज़ों का कमांडर-इन-चीफ़ जनरल गफ, गवर्नर जनरल हार्डिंग सहित अपनी फौज की कमांड पर था, जबकि सिक्खों का कमांडर लाल सिंघ भाग गया था। जॉर्ज ब्रूस अपनी पुस्तक 'सिक्स बैटल फॉर इंडिया दी एंग्लो-सिक्ख वार्ज़, के पृष्ठ ११७ पर लिखता है-- "The British were having five to one infantry superiority over to Sikhs." अंग्रेज़ों का राजनयिक अधिकारी, मौके का गवाह कैप्टन निकोलसन इस मुद्दकी की लड़ाई के समय सिक्ख फौज की कुल संख्या (रेगुलर और घुड़सवार) के बारे में लिखता है कि यह संख्या ३५०० से अधिक नहीं थी। इसी प्रकार कर्नल मालेसन लिखता है कि सिक्खों की २००० से भी कम पैदल फ़ौज का मुकाबला अंग्रेज़ों की ११००० पैदल फ़ौज के साथ था। फिर भी सिक्ख वीरता और अनुशासन का प्रदर्शन करते हुए डटे रहे। वे एक-एक इंच ज़मीन की ख़ातिर लड़ते हुए पीछे हटते गए, परन्तु जब भी मौका मिलता दुश्मन पर टूट पड़ते थे। (संदर्भ : दी डीसीसिव बैटल ऑफ इंडिया, पृष्ठ ३५६-३५७) लड़ाई के समय उपस्थित परूशिया के शहज़ादे का निजी डॉक्टर हौफमैइस्टर लिखता है कि संख्या में बहुत कम होते हुए भी पैदल सिक्ख फ़ौज ने तीन बार आगे बढ़ते हुए अंग्रेज़ों को खदेड़ने की कोशिश की थी। अंग्रेज़ रात १२ बजे लड़ाई ख़त्म होने के बाद मीलों तक रेतीले मैदान में वर्दी सहित भूखे-प्यासे लेटे हुए सारी रात सो न सके कि सिक्ख कहीं रात में पुनः हमला न कर दें। उन्होंने सिक्खों की तोपों की ऐसी भयानक मार अभी तक दुनिया में लड़ते हुए कहीं भी नहीं देखी थी। जनरल गफ की फ़ौजी समझ और सूझबूझ जवाब दे रही थी कि उनके इतने ज़्यादा उच्च अधिकारी कैसे मारे गए। जॉर्ज ब्रूस लिखता है कि सिक्ख तोपों की भयानक मार के कारण अंग्रेज़ों का हमला पछाड़ दिया गया था। कुछ अंग्रेज़ मनचले आफिसर तो कह रहे थे कि सिक्खों के साथ लड़ने के लिए इतनी ज़्यादा फ़ौज की ज़रूरत नहीं थी, मगर इस लड़ाई के समय उनकी उम्मीद के विपरीत घटित हो रहा था जो कि उनकी पैदल और घुड़सवार कुल १८, ५०० फ़ौज सिक्खों की लगभग ३५०० फ़ौज के साथ लड़ने में असमर्थ नजर आ रही थी। इस तरह सिक्खों ने बिना जरनैलों के लड़ते हुए देश की आज़ादी की इस पहली जंग में अपनी बहादुरी और फ़ौजी ताकत के ऐसे जौहर दिखाए कि यूरोपियन यह देख कर दंग रह गए थे।

अंग्रेज़ों के पूरबिए सिपाही इस पहली आज़ादी की लड़ाई में सिक्खों की देश-भक्ति, बहादुरी और फ़ौजी ताकत से फिर भी प्रभावित न हुए और अंग्रेज़ों के ही वफ़ादार बने रहे। यह सिलसिला अंग्रेज़ों और सिक्खों की दूसरी जंग (१८४८- ४९ ई.) तक चलता रहा। उल्टा पंजाब पर कब्ज़े के बाद जो लगभग ४०, ००० हिंदुस्तानी सिपाही अंग्रेज़ों ने पंजाब में तैनात कर रखे थे, पंजाबियों को चिड़ा रहे थे कि उन्होंने

सिक्खों को हराया है, अंग्रेज़ों ने नहीं। अंग्रेज़ फ़ौज के नये बने कमांडर-इन-चीफ़ जनरल चार्ल्स नेपियर ने गवर्नर जनरल के परामर्श से सन् १८४९ ई. में कमांड संभालते समय इन हिंदुस्तानी सिपाहियों की भविष्य में उठने वाली बाग़ी सुरों को पहचानते हुए उनकी ७४ रेजिमेंटों में 'बांटो और राज करो' की नीति के अंतर्गत ८० से १०० (खालसा) सिक्ख प्रत्येक रेजिमेंट में भर्ती कर लिए थे। १८५६-५७ ई. के विद्रोह के समय इनमें ४३ रेजिमेंटें पंजाब से बाहर और ३१ पंजाब के अंदर तैनात थीं। अंग्रेज़ों और हिंदुस्तानी लोगों के परामर्श के विपरीत इन सिक्ख सिपाहियों ने इस विद्रोह के समय अंग्रेज़ों का नहीं, बल्कि अपने हिंदुस्तानी भाइयों का केवल साथ ही नहीं दिया, बल्कि उन्हें अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ बग़ावत करने के लिए उत्साहित भी किया था। विद्रोह के समय अंग्रेज़ों के साथ लड़ते हुए इन पंजाब के सिक्ख सिपाहियों ने बहादुर शाह जफर की सहमति में एक अलग सिक्ख ब्रिगेड (३००० पैदल) भी स्थापित कर लिया था, जो कठिन मोर्चों पर लड़ते हुए अंग्रेज़ों को खदेड़ता रहा था। (जोगिंदर सिंघ,'१८५७ मिथ एंड रीएलटी', पृष्ठ १८१) पंजाब में अंग्रेज़ों की लाख कोशिशों के बावजूद अंग्रेज़ों द्वारा नयी खड़ी की जा रही लगभग १०० सिक्ख रेजिमेंटों में सिक्ख भर्ती नहीं हुए थे, जो ग़दर के समय विद्रोहियों को ख़त्म करने के लिए जॉन लारेंस चीफ़ कमिशनर पंजाब दिल्ली भेज रहा था। इन नयी सिक्ख रेजिमेंटों के सिपाही सिक्ख नहीं थे, बल्कि मुलतान, बलोचिस्तान और अफगानिस्तान के साथ लगते सीमावर्ती इलाके के बहुत-से मुसलमान और कुछ हिंदू थे, जिन्हें गवर्नर जनरल डलहौजी साजिश के अधीन सिक्ख बता रहा था। पंजाब में तो अंग्रेज़ों ने पंजाबियों, ख़ास कर सिक्खों के सब प्रकार के हथियार ज़ब्त कर लिए थे, यहाँ तक कि उनकी गातरे वाली छोटी कृपाण पहनने पर भी पाबंदी थी। पंजाबी दिल से अंग्रेज़ों के साथ घृणा करते थे, जिस कारण कई स्थानों पर उनके द्वारा पूरबी विद्रोहियों की मदद करने के दोष में वे फांसी पर लटकाए गए थे। समय के साथ विद्रोह की घटनाएँ पंजाब के अंदर भी उठने लगी थीं, जिस कारण जॉन लारेंस को दिल्ली और मदद भेजने से मना करते हुए यह कहना पड़ा था-- Unable to send further help, Punjab on the verge of being lost unless Delhi is conquered और यही पार्लियामेंट रिपोर्ट दिखा रही थी:-- Universal revolt in Punjab would have broken out if Delhi had not soon fallen into our hands." (Joginder Singh, '1857 Myth and Reality', p. 138-140)

देर रात तक चली मुद्दकी की इस आज़ादी की पहली लड़ाई में जहाँ अंग्रेज़ों के १६ उच्च अधिकारियों सहित कुल २१६ आदमी मारे गए, वहीं सिक्खों का भी बहुत भारी जानी नुकसान हुआ। घायलों में अंग्रेज़ों के ४८ उच्च अधिकारी और ६०९ सिपाही शामिल थे। मुद्दकी और आस-पास के गाँव खाली हो चुके थे, इसलिए

सिक्ख फौजियों की लाशें वहीं बिखरी पड़ी थीं। अंग्रेज़ों ने तो अपने घायल सैनिक संभालते हुए अपने मृतक सैनिकों की अंतिम रस्में पूरी कर दी थीं, परन्तु देश-भक्ति की ख़ातिर शहीद हुए पंजाबियों की किसी ने खबर न ली। अंग्रेज़ सिविल अधिकारी रॉबर्ट क्रस्ट, गवर्नर जनरल के काफ़िले के साथ वापिस लौटता हुआ २७ मार्च, १८४६ ई. को जब फिरोजशाह और मुद्दकी से गुज़रा तो इन सड़ रही लाशों के दर्दनाक दृश्य को देखता हुआ तड़प उठा। (रॉबर्ट क्रस्ट, दी हिस्ट्री ऑफ कोनकुएस्ट ऑफ दी पंजाब, पृष्ठ ४७-४८) कई महीनों बाद जब मुद्दकी के लोग घरों को लौटे तो वयोवृद्ध बाबा मसतान सिंघ ज़ैलदार गाँव मुद्दकी की गवाही के अनुसार जो लगभग ४०० सिक्ख फ़ौजी मारे गए थे, के पिंजरों को दो बड़ी-बड़ी चिताओं में इकठ्ठा कर उनका दाह संस्कार किया गया था। (संदर्भ : करम सिंघ हिस्टोरियन, ऐतिहासिक खोज, भाग दूसरा, पृष्ठ ३८-३९) स. अमरपाल सिंघ अपनी पुस्तक में मारे गए या गंभीर रूप से घायल सिक्ख फौजियों की संख्या ३०० के करीब लिखते हैं। उनके मुताबिक मर रहे ज़ख्मियों ने अंग्रेज़ों से मदद की भिक्षा नहीं माँगी। उन्होंने गिरफ़्तारी की जगह लड़ाई के मैदान में ही मौत को गले लगाना अपनी शान समझा था। (दी फर्स्ट एंग्लो-सिक्ख वार, पृष्ठ ५४)

**स्रोत पुस्तकें :**

१. सिक्स बैटल फॉर इंडिया, दी एंग्लो- सिक्ख वार्ज़, जॉर्ज ब्रूस
२. कॅरियर ऑफ मेजर जॉर्ज ब्राडफुट, डब्ल्यू ब्राडफुट
३. दी पंजाब पायनियर फ्रीडम फाईटर्स, एम. एल. आहलूवालिया और किरपाल सिंघ
४. जंग हिंद पंजाब दा, हरभजन सिंघ (चीमा)
५. ए हिस्ट्री ऑफ दी सिक्खस, जे. डी. कनिंघम
६. प्राइवेट कोर्सपाउडेंस रीलेटिंग टू एंग्लो- सिक्ख वार्ज़, डॉ. गंडा सिंघ
७. वाक्याए-जंग-ए-सिक्खां, दीवान अयोध्या प्रसाद
८. दी हीरो ऑफ देहली, पियर्सन हैसकथ
९. दी फस्ट एंड सेकंड सिक्ख वार्ज़, कर्नल आर. जी. बर्टन
१०. गुलशन-ए-पंजाब, पंडित देवी प्रसाद
११. दी डीसीसिव बैटल आंफ इंडिया, कर्नल जी. बी. मालेसन
१२. दी पंजाब इन पीस एंड वार्ज़, एस. एस. थोरबरन
१३. १८५७ : मिथ एंड रीएल्टी, स. जोगिंदर सिंघ
१४. दी हिस्ट्री ऑफ दी कोनकुएस्ट ऑफ दी पंजाब, रॉबर्ट क्रस्ट
१५. ऐतिहासिक खोज, भाग दूसरा, स. करम सिंघ हिस्टोरियन
१६. दी फस्ट एंग्लो-सिक्ख वार, स. --अमरपाल सिंघ

# महान धार्मिक और साहित्यिक शख्सियत : भाई वीर सिंघ

*— डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

भाई वीर सिंघ आधुनिक पंजाबी साहित्य के प्रणेता और प्रवर्तक हैं। वे एक धार्मिक नेता, गुरमुख व्यक्तित्व और सुंदर आत्मा के धनी साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। भाई वीर सिंघ ने अपने साहित्य के माध्यम से सिक्खों में धार्मिक और सामाजिक जागृति लाने का तथा पंजाबी भाषा को प्रफुल्लित करने का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया।

भाई वीर सिंघ का जन्म ५ दिसंबर, १८७२ ई. को श्री अमृतसर साहिब में हुआ। आपने सिक्खों के परम हितैषी दीवान कौड़ा मल्ल के वंश में जन्म मिला।

**समृद्ध विरासत के उत्तराधिकारी**

भाई वीर सिंघ के पिता भाई चरण सिंघ और नाना ज्ञानी हजारा सिंघ सिक्ख संस्कृति के गंभीर और उच्च कोटि के विद्वान् थे। भाई वीर सिंघ को विद्या, ज्ञान और सिक्खी आचरण विरासत में मिला। इस प्रकार विशेष धार्मिक एवं साहित्यिक वातावरण तथा विद्वानों की संगति में भाई वीर सिंघ का व्यक्तित्व विकसित हुआ।

**शिक्षा-दीक्षा :**

भाई साहिब को समय के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था की गई। उर्दू-फ़ारसी का ज्ञान उन्होंने एक मौलवी से हासिल किया और पंजाबी भाषा का ज्ञान ज्ञानी हरभजन सिंघ से प्राप्त किया। आठ साल की आयु में भाई साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सहिज पाठ पूरा कर लिया था।

१८९१ ई. में उन्होंने चर्च मिशन स्कूल, श्री अमृतसर साहिब की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की और जिले में टॉप किया। दसवीं पास करने के बाद भाई साहिब ने घर पर ही दार्शनिक ग्रंथों और साहित्यिक कृतियों का विशद अध्ययन किया।

भाई साहिब अभी स्कूली शिक्षा प्राप्त कर ही रहे थे कि उनका विवाह श्री नारायण सिंघ की पुत्री बीबी चतर कौर के साथ हो गया। दसवीं कक्षा पूरी करने के बाद उनके माता-पिता उनके रोज़गार को लेकर चिंतित हो उठे। दो-तीन जगह से नौकरी के निमंत्रण भी आए, परंतु भाई साहिब अंग्रेजों के लिए काम करने के पक्ष में नहीं थे।

**साहित्यिक एवं रचनात्मक यात्रा**

भाई वीर सिंघ 'सिंघ सभा आन्दोलन' के अग्रणी विद्वान-साहित्यकार रहे हैं। सिंघ सभा

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

आंदोलन का जन्म सिक्ख समाज की सैद्धांतिक कमज़ोरी और व्यवहारिक गिरावट को दूर करने के लिए हुआ था। जिन अन्धविश्वासों और कुरीतियों को गुरमति में वर्जित किया गया था, सिक्ख उन्हीं में फंसते चले जा रहे थे।

भाई साहिब ने जनमानस को जागृत करने और अपनी समृद्ध संस्कृति से अवगत कराने के लिए दो आदर्श स्थापित किये-- पहला, शिक्षा का प्रचार-प्रसार और दूसरा, मातृभाषा पंजाबी में साहित्य का सृजन। प्रथम आदर्श की प्राप्ति के लिए चीफ खालसा दीवान द्वारा शैक्षणिक गतिविधियां आरंभ की गईं और दूसरे आदर्श की प्राप्ति के अंतर्गत लोगों को जागृत करने व उन्हें अपनी समृद्ध विरासत के साथ जोड़ने के लिए भाई साहिब ने अपना पूरा जीवन श्रेष्ठ साहित्य सृजन को समर्पित कर दिया।

भाई वीर सिंघ की साहित्यिक साधना का मूल उद्देश्य समसामयिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में सिक्ख धर्म और गुरमति की नई व्याख्या करना था।

भाई वीर सिंघ ने १८९२ ई. में 'वज़ीर हिन्द प्रेस' खोला और साहित्य-लेखन-प्रकाशन प्रारंभ किया। सन् १८९४ में उन्होंने खालसा ट्रैक्ट सोसायटी, श्री अमृतसर साहिब की स्थापना की, जिसके माध्यम से उन्होंने और अन्य सिक्ख विद्वानों ने सैकड़ों लेख लिखे और प्रकाशित कर, उन्हें घर-घर पहुँचा कर लोगों को गुरमति के अनुसार जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। १८९९ ई. में 'खालसा समाचार' अखबार प्रकाशित हुआ, जो आज भी चल रहा है। १९०२ ई. से उन्होंने चीफ खालसा दीवान, श्री अमृतसर साहिब की गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया और जीवन भर दीवान के एक अत्यधिक सम्मानित सदस्य के रूप में काम किया। उन्होंने खालसा अनाथालय, श्री अमृतसर साहिब की स्थापना में भी सक्रिय रूप से भाग लिया और हज़ारों सिक्ख बच्चों का पालन-पोषण किया, उन्हें ईसाई मिशनरियों के प्रभाव में आने से बचाया। उन्होंने सिक्ख एजूकेशन सोसायटी के संचालन के लिए सिक्ख एजूकेशन कमेटी, श्री अमृतसर साहिब में बहुत सक्रिय रूप से भाग लिया और सिक्खों के बीच शिक्षा का प्रकाश फैलाने के लिए पूरे दिल से सेवा की।

**भाई साहिब की कृतियां**

भाई साहिब ने गद्य-पद्य-लेखन शोध आदि प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया। भाई साहिब के द्वारा रची गई गुरु साहिबान की जीवनियां 'श्री गुरु नानक चमत्कार', 'श्री कलगीधर चमत्कार' और 'अष्ट गुरु चमत्कार' बहुत महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

'मटक हुलारे', 'लहिर हुलारे', लहिरां दे हार', 'बिजलियां दे हार', 'कंबदी कलाई', 'कंत महेली', 'प्रीत वीणा', 'मेरे साइयां

जीओ' आदि भाई साहिब के प्रमुख काव्य ग्रंथ हैं। 'राणा सूरत सिंघ' भाई साहिब का महाकाव्य है।

'सुंदरी', 'बिजै सिंघ', 'सतवंत कौर' और 'बाबा नौध सिंघ' भाई साहिब के प्रमुख उपन्यास हैं।

भाई साहिब का एक नाटक भी बहुत प्रसिद्ध है-- 'राजा लखदाता सिंघ'।

'श्री गुरु ग्रंथ साहिब कोश', 'संथिआ पोथीआं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' और 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' भाई साहिब के गुरबाणी-शोध एवं व्याख्या संबंधी ग्रंथ हैं।

भाई साहिब के संपादित ग्रंथों में 'पुरातन जन्म साखी', 'प्राचीन पंथ प्रकाश' और 'भाई गुरदास वारां, कबित्त सवैये' प्रमुख हैं।

भाई साहिब के प्रमुख अनुवाद हैं-- 'गंजनामा' और 'तौसीफो सना भाई नंद लाल गोया' तथा 'भरथरी हरी जीवन और नीतिशतक'।

इसी प्रकार 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब कोश' और 'पंजाबी-फ़ारसी लुगत' की रचना भी भाई साहिब ने की है।

इसके अतिरिक्त भाई साहिब ने १८९१ ई. से १९५७ ई. तक लगभग दो सौ ट्रैक्टों की रचना की।

प्रो. पूरन सिंघ ने भाई साहिब को 'कवि चूड़ामणि' की उपाधि दी है और लाला धनी राम चात्रिक ने 'पंजाबी साहित्य मंडल का मुक्तामणि मोढी' कहा है। स. मोहन सिंघ दीवाना ने आपको कहा 'ऋषि जोगी'। स. गोपाल सिंघ दरदी ने आपकी कविता को 'क्लासिक कविता' माना है। प्रो. गुरबचन सिंघ तालिब आपको 'शिरोमणि कवि' कहते थे।

**उत्कृष्ट समाज-सेवी**

भाई वीर सिंघ कई पंथक संगठनों के संस्थापक, संचालक और सदस्य थे, जिनमें प्रमुख हैं -- खालसा ट्रैक्ट सोसायटी (सन् १८९३), चीफ खालसा दीवान श्री अमृतसर साहिब (सन् १९०२), सेंट्रल खालसा यतीमखाना (सन् १९०४), सिक्ख एजूकेशन कमेटी और सेंट्रल खालसा प्रचारक विद्यालय तरनतारन (सन् १९०८), गुरुद्वारा हेमकुंट ट्रस्ट (सन् १९२६), सेंट्रल सूरमा सिंघ आश्रम (सन् १९३५), फ्री होम्योपैथिक अस्पताल (सन् १९४३) आदि। खालसा कॉलेज श्री अमृतसर साहिब को पंथक प्रबंध के अंतर्गत लाने और पंजाब एण्ड सिंध बैंक की स्थापना में भी भाई साहिब की मुख्य भूमिका थी।

**मान-सम्मान**

सन् १९४९ में पंजाबी विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डॉक्टर ऑफ ओरिएंटल लर्निंग' की मानद उपाधि से सम्मानित किया। पंजाब सरकार के पंजाबी विभाग (वर्तमान भाषा विभाग) की स्थापना सन् १९५१ ई. में हुई थी। यहां उन्हें 'शिरोमणि पंजाबी साहित्य

पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सन् १९५२ में उन्हें पंजाब की प्रथम विधान परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया। सन् १९५४ में उन्हें भारतीय अकादमी, नई दिल्ली की जनरल काउंसिल के सदस्य के रूप में नामित किया गया। वर्ष सन् १९५४ में मुंबई में आयोजित एक भव्य समारोह में उन्हें 'भाई वीर सिंघ अभिनन्दन ग्रन्थ' भेंट किया गया। सन् १९५५ में भारतीय साहित्य अकादमी ने 'मेरे साइयां जीओ' पुस्तक के लिए आपको ५०००/- रुपये का पुरस्कार दिया। सन् १९५७ में गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

**प्रेरणा के पुंज**

भाई वीर सिंघ का व्यक्तित्व चुम्बकीय था। उनका कोई सानी नहीं था। जो भी मिला, उसे अपना बना लिया। कौमी जागृति लाने, मातृभाषा का सम्मान करने तथा धर्म के प्रचार-प्रसार में भाई साहिब ने जो भूमिका निभाई, उसे लिखना असंभव है। उनके जीवन और जीवन-शैली से बहुत-से लोग प्रभावित हुए और श्री गुरु नानक देव जी के निर्मल पंथ के अनुयायी बन गये।

मास्टर तारा सिंघ, जिन्होंने शिरोमणि अकाली दल के नेता के रूप में लगभग ४० वर्ष तक सिक्ख समुदाय का नेतृत्व किया, अपने जीवन के आरंभिक समय में सिक्ख नहीं थे। जब उन्होंने भाई वीर सिंघ की कृति 'सुंदरी' पढ़ी तो वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने सिक्खी स्वरूप धारण कर लिया।

इसी प्रकार साहित्यकार प्रो. पूरन सिंघ उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जापान गए, जहाँ उन्होंने अपनी पारंपरिक 'सिक्खी' से सन्यास ले लिया। देश लौटने पर भाई वीर सिंघ की संगत का ही चमत्कार था कि वे फिर से गुरसिक्ख सज गए।

**अकाल प्रस्थान**

जून, सन् १९५७ के पहले सप्ताह में, भाई साहिब को बुखार हो गया, जो लगातार जारी रहा और जीवन के लिए ख़तरा साबित हुआ। स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होता गया, लेकिन जीवन भर आलस्य उनके पास नहीं फटका था। डॉक्टरों, दोस्तों, रिश्तेदारों ने उन्हें पूरी तरह से आराम करने की सलाह दी, लेकिन जो लोगों को कर्मठता का उपदेश देते रहे, वे आराम कैसे कर सकते थे।

आख़िरकार १० जून, १९५७ ई. को आधुनिक पंजाबी साहित्य के जनक, प्रकृति-प्रेमी ये कवि अकाल पुरख के चरणों में जा बिराजे। अपने पंथक एवं साहित्यिक कार्यों के कारण भाई वीर सिंघ हमेशा के लिए अमर हो गये।

ख़बरनामा

## 1984 ई. में जोधपुर जेल में नज़रबंद रहे सिक्खों के मामलों की पैरवी करने वालों को किया गया सम्मानित

श्री अमृतसर साहिब : २४ अक्तूबर : जून, १९८४ ई. में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब पर तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा किए गए फ़ौजी हमले के दौरान गिरफ़्तार कर जोधपुर जेल में नज़रबंद रखे गए सिक्खों के मामलों की पैरवी करने वाले वकीलों तथा अन्य सहयोगी शख़्सियतों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विशेष तौर पर सम्मनित किया गया। इन सम्मानित शख़्सियतों में सीनियर एडवोकेट पूरन सिंघ हुन्दल, एडवोकेट लखवीर सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व सचिव स. सतबीर सिंघ (धामी) और स. दलीप सिंघ जगदेव कलाँ शामिल हैं। इसके अलावा मौजूदा समय में जेलों में नज़रबंद बेकसूर सिक्ख नौजवानों के मामलों की पैरवी कर रहे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका को भी सम्मानित किया गया। सम्मानित शख़्सियतों को गुरु-बख़शीश सिरोपायो, लोई, श्रीसाहिब और विशेष तश्तरी दी गई।

## बेग़म मुनव्वर-उल-निसा के निधन पर एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी द्वारा शोक व्यक्त

श्री अमृतसर साहिब : २७ अक्तूबर : छोटे साहिबज़ादों की शहादत के अवसर पर 'हा' का नारा मारने वाले नवाब-ए-मलेरकोटला शेर मुहम्मद खान के परिवार की आखिरी बेग़म मुनव्वर-उल-निसा के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि सिक्ख इतिहास में नवाब मलेरकोटला का नाम सम्मान सहित दर्ज है और कौम इनके वंशजों का भी हमेशा आदर करती रही है। उन्होंने कहा कि मलेरकोटला वंश की आखिरी बेग़म मुनव्वर-उल-निसा के निधन का बेहद दुख हुआ है। एडवोकेट धामी ने कहा कि नवाब मलेरकोटला द्वारा हक-सच के लिए उठाई आवाज़ को सिक्ख कौम हमेशा याद रखेगी।

वर्णनीय है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बेग़म मुनव्वर-उल-निसा को अप्रैल, २०२३ ई. में श्री फ़तिहगढ़ साहिब में एक विशेष समागम के अवसर पर सम्मानित भी किया गया था।

# एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी लगातार तीसरी बार बने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान

श्री अमृतसर साहिब : ८ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों के हुए वार्षिक चयन के दौरान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी लगातार तीसरी बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान चुने गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में आयोजित जनरल इजलास के दौरान हुई चयन-प्रक्रिया के अवसर पर कुल १३७ मतं में से ११८ मत प्राप्त कर एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने जीत हासिल की। उनके विपक्षी उम्मीदवार स. बलबीर सिंघ घुन्नस को १७ मत हासिल हुए, जबकि २ मत रद्द हुए। इजलास के दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी और श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के अवर मुख्य ग्रंथी ज्ञानी मलकीत सिंघ और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के १३७ सदस्य उपस्थित रहे।

जनरल इजलास के दौरान वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए स. हरभजन सिंघ मसाणा, कनिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए स. गुरबख़्श सिंघ खालसा और महासचिव पद के लिए भाई रजिंदर सिंघ महिता को चुना गया। इसके अलावा कार्यकारिणी कमेटी के ११ सदस्य भी चुने गए, जिनमें स. मोहन सिंघ बंगी, स. रघबीर सिंघ सहारनमाजरा, स. जसमेर सिंघ लाछड्डू, स. खुशविंदर सिंघ (भाटिया), बीबी हरदीप कौर खोख, स. इंदरमोहन सिंघ लखमीरवाला, स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, बीबी मलकीत कौर कमालपुर, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, बीबी जसपाल कौर तथा स. जसवंत सिंघ पुड़ैण शामिल हैं।

एडवोकेट धामी ने प्रधान चुने जाने के बाद मीडिया के साथ बात करते हुए कहा कि गुरु साहिब की कृपा से उन्हें यह सेवा तीसरी बार मिली है। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों के समूचे हाऊस के साथ-साथ शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल तथा दल के सीनियर नेताओं का धन्यवाद भी किया और कहा कि वे यत्न करेंगे कि सिक्ख पंथ की प्रतिनिधि संस्था की सेवा कौमी भावनाओं के अनुसार की जाए। एडवोकेट धामी ने कहा कि यह समय कौम के लिए चुनौतियों वाला है, क्योंकि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का सामान्य चुनाव सामने होने के साथ-साथ कई पंथक मसले भी दरपेश हैं। उन्होंने कहा कि चाहे केंद्र सरकार हो या पंजाब

की सरकार हो, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की वोट बनाने की प्रक्रिया में दोनों सरकारें दखलअन्दाज़ी कर रही हैं। एडवोकेट धामी ने कहा कि आज सिक्ख कौम के सामने बंदी सिंघों की रिहाई का एक बड़ा मसला है, जिसके लिए उचित कदम उठाए जाएंगे। मीडिया के एक सवाल का जवाब देते हुए एडवोकेट धामी ने कहा कि आज का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों के चयन का परिणाम यह दिखाता है कि दल के समूचे सदस्य एकजुट हैं और अपनी पार्टी पर भरोसा करते हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की भविष्यत् योजनाएँ और किए जाने वाले कार्यों के बारे में स्पष्ट करते हुए कहा कि धर्म प्रचार के साथ-साथ स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में नयी संशोधनों व दिशाओं के अंतर्गत आगे बढ़ा जायेगा। इसके अलावा श्री दरबार साहिब पहुँचने वाली संगत के लिए नयी सराय स्थापित करना भी एजंडे पर होगा। उन्होंने कहा कि और भी कई कौमी कार्य किये जाने वाले हैं, जिन पर कौम के विद्वानों और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों के परामर्श से काम किया जायेगा। उन्होंने कहा कि आवश्यकतानुसार प्रशासनिक सुधारों की तरफ भी बढ़ा जायेगा।

### एडवोकेट धामी और चुने अन्य पदाधिकारियों ने गुरु साहिब का किया शुक्राना

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान चुने जाने के बाद एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी सहित अन्य पदाधिकारियों ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में नत्मस्तक होकर गुरु साहिब का शुक्राना किया, जहाँ उन्हें मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी रघबीर सिंघ ने गुरु-बख़शीश सिरोपायो प्रदान किए। एडवोकेट धामी सहित सभी पदाधिकारी श्री अकाल तख़्त साहिब पर भी गुरु साहिब का शुक्राना करने के लिए गए। इसके पश्चात् शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने कार्यालय में अपना कार्यभार संभाला और सभी पंथक दलों को साथ लेकर चलने की वचनबद्धता प्रकट की ।

## बंदी छोड़ दिवस पर

## श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार द्वारा कौम के नाम संदेश जारी

श्री अमृतसर साहिब : १२ नवंबर : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में बंदी छोड़ दिवस श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देश-विदेश की संगत ने नत्मस्तक होकर गुरु साहिब के प्रति श्रद्धा-सम्मान भेंट किया। बंदी छोड़ दिवस से सम्बन्धित गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल में आयोजित गुरमति समागम के दौरान पंथ-प्रसिद्ध रागियों, ढाडियों, कवीशरी जत्थों, प्रचारकों और कवियों ने गुरबाणी-कीर्तन एवं सिक्ख इतिहास का व्याख्यान किया।

इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की दर्शनी ड्योड़ी से सिक्ख पंथ के नाम संदेश देते समय गत १७ वर्ष से जेल की ८ फुट आकार की चक्की में बंद भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की फांसी की सज़ा रद्द करने से सम्बन्धित केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचना जारी कर मुकर जाने, सज़ा पूरी कर चुके बंदी सिंघों की रिहाई न करने, ३९ वर्ष के बाद भी नवंबर १९८४ ई. के सिक्ख कत्लेआम के दोषियों को सज़ा न मिलने और पंजाब के साथ केंद्र सरकार के राजनैतिक भेदभाव की बात करते हुए सिक्ख कौम को अपने अधिकारों के लिए एकजुटता के साथ आवाज़ बुलंद करने का आह्वान दिया।

ज्ञानी रघबीर सिंघ ने बंदी छोड़ दिवस की बधाई देते हुए कहा कि इस दिवस का सम्बन्ध सिक्ख धर्म के संस्थागत प्रचार-प्रसार और जब्र-जुल्म के विरुद्ध संघर्ष के दौरान कौमी तकदीर बदलने के अहम दिवस के रूप में भी जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि समय-समय पर मुग़ल हाकिमों द्वारा लगाई गई तुअस्सबी पाबंदियों के बावजूद भी बंदी छोड़ दिवस के अवसर पर सिक्ख अपने केंद्रीय स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब पहुँच कर गुरु-यश श्रवण करते थे और मिल बैठ कर कौम के लिए भविष्यत् योजनाएं बनाते थे। इस परंपरा ने सिक्ख कौम की कठिन समय से बाहर निकलने और नई दिशाएं तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे आज भी दिशा लेने की ज़रूरत है। ज्ञानी रघबीर सिंघ ने भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की कुर्बानी, जज़्बे और दृढ़ इरादे की प्रशंसा करते हुए कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा भाई राजोआणा की फांसी की सज़ा को उम्रकैद में तबदील करने से सम्बन्धित दायर याचिका पर केंद्र सरकार द्वारा कोई फ़ैसला अमल में लेकर न आना सिक्खों के मानवाधिकारों का उल्लंघन है। उन्होंने केंद्र सरकार को बंदी सिंघों को तुरंत रिहा कर सिक्खों को इंसाफ़ देने के लिए कहा।

ज्ञानी रघबीर सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को भी आदेश दिया कि वह समूह बंदी सिंघों की रिहाई और भाई राजोआणा की फांसी की सज़ा को उम्रकैद में तबदील करवाने के लिए ठोस और तीव्र यत्न आरंभ करे। इससे सम्बन्धित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी समूह पंथक दलों और जत्थेबंदियों की एक विशेष सभा बुलाए। इसके साथ ही उन्होंने दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को भी आदेश जारी किया कि वह अपने प्रभाव और निकटवर्ती संबंधों का प्रयोग कर केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय से भाई राजोआणा से सम्बन्धित याचिका पर फ़ैसला करवाने के लिए गंभीरता के साथ यत्न करे और इससे सम्बन्धित १५ दिन के अंदर अपनी रिपोर्ट श्री अकाल तख़्त साहिब पर भेजे। उन्होंने समूह पंथक जत्थेबंदियों को भी बंदी सिंघों से सम्बन्धित विशेष यत्न करने के लिए कहा। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने भाई बलवंत सिंघ राजोआणा को भी सम्बोधित होते हुए कहा कि वे कोई भी ऐसा कदम न उठाएं, जो

उनकी ज़िंदगी और कौम के लिए चिंताजनक हो।

जत्थेदार ने अपने संदेश में विदेश में अलग पहचान से सम्बन्धित भ्रम और नसलवाद की भावना के साथ सिक्खों पर हो रहे हमलों पर चिंता व्यक्त करने के साथ-साथ भारत में भी सिक्खों के प्रति बढ़ रही असहनशीलता पर गंभीर रुख दिखाया। उन्होंने कहा कि मात्र दो प्रतिशत आबादी होने के बावजूद आज़ादी के लिए हुई कुर्बानियों में से ८० प्रतिशत कुर्बानियां करने वाले सिक्खों के साथ देश में राजनैतिक भेदभाव की शृंखला लगातार लंबी हो रही है। पंजाब की राजनैतिक स्वतन्त्रता, दरियाई पानी, डैम, पंजाबी भाषीय इलाके और राजधानी के बाद अब पंजाब में रोज़गार का आरक्षित हक भी धीरे-धीरे पंजाबियों के हाथ से छीना जा रहा है। उन्होंने चिंता प्रकट करते हुए कहा कि पंजाब के शिक्षित नौजवान रोजगार के लिए सड़कों पर संघर्ष कर रहे हैं, परन्तु सारे राज्यों से धड़ाधड़ लोग यहाँ आकर सरकारी व निजी क्षेत्र में रोज़गार के साधनों पर काबिज़ हो रहे हैं। सुनियोजित साज़िश के अंतर्गत पंजाब की किसानी और उपजाऊ धरती को बर्बाद किया जा रहा है। इसी का परिणाम है कि मायूस हुई सिक्ख नौजवानी विदेश की ओर प्रवास कर रही है। उन्होंने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि नवंबर, १९८४ ई. की सिक्ख नसलकुशी के कातिल ३९ वर्ष बाद भी कानून की पकड़ से बाहर हैं, जबकि हमारे बन्दी सिंघ उम्रकैद की सज़ा पूरी होने के बावजूद भी जेल में कैद हैं।

ज्ञानी रघबीर सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सिक्ख नौजवानों को नि:शुल्क सिविल सेवाओं की परीक्षा की तैयारी के लिए 'निश्चय प्रशासकीय सेवा प्रशिक्षण केंद्र' स्थापित करने पर ख़ुशी प्रकट करते हुए कहा कि सिक्ख समाज को देखादेखी अपने बच्चे शिक्षा या रोज़गार के लिए विदेश भेजने की बजाय यहाँ रहते हुए अपनी काबलियत और ऊर्जा को रचनात्मक दिशा की तरफ केंद्रित कर उच्च प्रशासनिक, डॉक्टरी शिक्षा, तकनीकी और व्यापार के क्षेत्र में आगे आने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने सिक्ख कौम को देश में अपने साथ हो रहे राजनैतिक भेदभाव को रोकने के लिए और राजनैतिक हक-हकूक महफूज़ रखने के लिए अपनी क्षेत्रीय और पंथक राजनीति को प्रफुल्लित व मज़बूत करने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए कहा कि सिक्खों की पंथक और राजनैतिक संस्थाओं को ख़त्म करने के लिए हो रही साजिशों से सचेत रह कर कौमियत को मज़बूत करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की घटित हो रही घटनाओं को रोकने के लिए केवल सरकारों से उम्मीद रखने की बजाय गुरु-घरों की पहरेदारी को ख़ुद मज़बूत करने की प्रेरणा भी की।

जब पहाड़ी राजाओं ने मिल कर श्री अनंदपुर साहिब पर हमला किया, तब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की जांबाज़
ख़ालसा फौज ने उनका डट कर मुकाबला किया। भाई बचित्तर सिंघ ने नागणी बरछे से वार कर मस्त हाथी
को ज़ख्मी करके वापिस भगा दिया। भाई उदै सिंघ ने आमने-सामने की लड़ाई में राजा केसरी चंद को मार गिराया।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

# GURMAT GYAN

December 2023

**DHARAM PARCHAR COMMITTEE,**

**Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)**

बड़े साहिबज़ादे शहादत से पहले रण-क्षेत्र में रण-कौशल दिखाते हुए

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-12-2023